।। बेली ग्रंथ ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ बेली ग्रंथ लिखंते ||

|| चोपाई ||

सब संतन सूं बीनती || लुळ लुळ लागे पाय ||
परा परम पद मोख हे || दीजो भेव बताय ||१||

|| दोहा ||

सभी परमपद मोक्ष पाये हुये संतो के चरणो में मै लुळलुळकर बारबार बिनंती करता हूँ कि जो बिना किसी दु:ख का याने त्रिगुणीमाया तथा होनकाल के परे का महासुख का परमपद है ऐसे मोक्षपद को घट मे प्रगट करने का भेद मुझे बतावो ||१||

भरम करम का अेक सही || मेटो सबे जंजाळ ||
नेहचळ निरभे ग्यान दो || कर्म न झाँपे काळ ||२||

मेरे सभी भ्रम याने त्रिगुणी माया के सभी छोटे बडे नाशवान सुख श्रेष्ठ व सत्य लगना तथा इन सुखोको देनेवाले कालके ग्रास बने हुये मायावी ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ती तथा अवतार सरीखे शुभकर्मी देवता और भेरु,मुंजोबा,पीरोबा,सितला,दुर्गासरीखे अशुभ कर्मी देवता श्रेष्ठ व सत्य लगना और ये देवी-देवता प्रसन्न होनेके लिये जप,तप,यज्ञ,हटयोग, सांख्ययोग,नवविद्या भक्ती ,ओअम की भक्ती,दुर्गा,सितला आदि की भक्ति,भेरु,भोपा की भक्ति,खेतपालकी भक्ति ये सभी कर्म क्रिया आवश्यक महसूस होना ऐसा मेरा भ्रम और कर्मोका जंजाल नाश होवे ऐसा ज्ञान मुझे देकर मेरे सभी भ्रम व कर्म का जंजाल पूर्णत: मिटा दो । मुझे जहाँ कर्म नही लगेगे यानेही काळ नही ग्रासेगा ऐसे निश्चल भयरहीत निर्भय देश के ज्ञान का भेद दो ||२||

किरपा कर गुरदेवजी || दीया भेव बताय ||
परम पद प्रकासिया || उर अंतर मध माय ||३||

सतगुरु महाराज ने कृपा करके जहाँ कर्म नही लगेंगे,काल नही ग्रासेगा ऐसे परमपद मोक्ष का भेद मुझे दिया । सतगुरु महाराज के भेद से मेरे हृदय मे भ्रम कर्म का जो अंधेरा था वह मिट गया और परमपद का प्रकाश हो गया |||३||

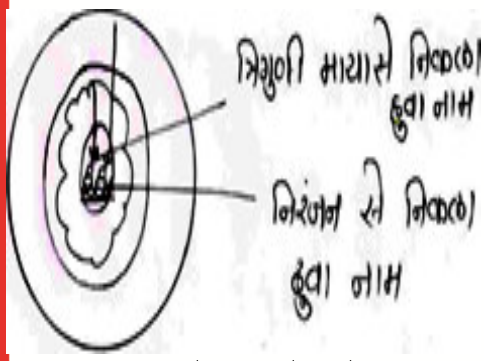

नाम निरंजण राम रस || पी पी हुवा उजास ||
सपत दीप नव खण्ड में || किया गिगन में बास ||४||

सतगुरु महाराजके भेदसे मायाके परेके निरंजन रामनाम का रस पी-पीकर मेरे अंतरमे परमपद मोक्षका उजाला हुवा और मै त्रिगुणी मायाके सात द्विप(जंबु,पुलस्त, शालमली,क्रुस,क्रौंच,शाक,पुष्कर)और नौ खंड त्यागकर सात द्विप,नौ खंडके परे सतस्वरुप गिगनमे जाकर बास किया ||४||

चहुँ दिस चमके दामणी || बीज हळाहळ होय ||
सूरज बोहोत प्रकाशिया || जुग सूज्या सब मोय ||५||

जैसे घोर अंधेरी बादलोके रातमे जगत जरासा भी नही सुजता और ऐसे भारी अंधेरेमे हळाहळ बिजली चमकती या घने काले बादलोसे जगत नही सुजता ऐसे घने काले बादलो को काटकर सुरज पूर्ण प्रकाशता और पूर्ण जगत सुजता इसीप्रकार मुझे मायाके सुखमे कालके दु:ख कैसे ओतप्रोत भरे है और जगतके नर–नारी कैसे दु:ख मे पडे है यह सुज रहा ।।५।।

अेसी अब बातां हुवे ।। सुणज्यो सब संसार ।।
पार ब्रम्ह परमात्मा ।। सो जस बारम्बार ।।६।।

सतगुरु के भेद से पारब्रम्ह परमात्मा प्रगट होने के कारण मुझमे माया के सुख कैसे झूठे है ? काल कैसा जुलूमी है और पारब्रम्ह परमात्मा कैसा सुख देनेवाला दयालू है यह बाते सहज मे ज्ञान से सुज रही है इसलिये मेरा पारब्रम्ह परमात्मा को बार–बार प्रणाम है और यही बाते जो जो सतगुरु का भेद लेकर पारब्रम्ह परमात्मा का राम नाम रस पियेगा उन सभी को होगी यह सभी संसार के नर–नारीयो समजो ।।६।।

दिन दिन निरमल अधिक हे ।। दिन दिन निरबल होय ।।
परम पद पर मोख में ।। बिरला समझे कोय ।।७।।

मेरे घटमे पारब्रम्ह परमात्मा प्रगट होनेके कारण मेरा हृदय मन और ५ आत्मावोके वासनावो से पूर्ण मलीन हुवा था वह दिन–प्रतिदिन वासनावो से मुक्त होकर निर्मल हो रहा और मन और ५ आत्मावो के विकारो के बल से त्रिगुणीमायामे झुंबकर कालके मुखमे डाल रहा था वह भी बल उसका दिन प्रतिदिन घट रहा । ऐसे पारब्रम्ह परमात्मा प्रगट होने के बाद प्राप्त होनेवाले मोक्ष के परमपद को कोई एखाद बिरला ही समजता ।।७।।

सो सत्त साहिब साईयाँ ।। लीला बोहोत अनेक ।।
घट घट भीतर राम ही ।। आद अंत मद अेक ।।८।।

कल भी था,आज भी है,कल भी रहेगा । ऐसा कोई समय नही था कि वह नही था ऐसे सतसाहेब जो मायाके समान कल थी तो आज नही और आज है तो कल नही ऐसे असत नही । उसकी जीवको तृप्त सुख देने की लीलाये मायासे न्यारी और बहोत तथा अनेक प्रकार की है । वह एक पारब्रम्ह परमात्मा राम जीवको सुख देनेके लिये घट घटमे आदिमे भी था, आज भी है और अंतमे भी रहता ऐसी उसकी लीला है । इस लीला को कोई बिरला ही समजता ।।८।।

परा परी परमात्मा ।। प्रमल बास सुवास ।।
सुर नर मुनि देव सब ।। करे सकळ जुग आस ।।९।।

जैसे फुल से उगा हुवा सुवास सभी को आनंद देता वैसा परापरी परमात्मा आदि से सभी को सुख ही दे रहा । इसलिये सभी,देवता,सभी देव,जगत की सभी नर–नारीया ऐसे सुख देवाल परमात्मा की घट मे प्रगट होने की आशा करते है ।।९।।

ब्रम्हा बेठा ध्यान धर ।। अंतर रया समाय ।।
तो गत तो गत सांईयाँ ।। यूं भजतां दिन जाय ।।१०।।

ब्रम्हा वह पारब्रम्ह परमात्मा घटमे प्रगट होवे इसलिये रात-दिन अपने हृदयमे पारब्रम्ह परमात्मा को भज रहा है । ब्रम्हाके भजते भजते दिन पे दिन,युग पे युग बित रहे परंतु ब्रम्हाको वह साई उसके घटमे आदि से होते हुये भी उसके गती का जरासा भी प्रकाश हुवा नही । ।।१०।।

सिव शंकर आसा करे ।। भजे न केवळ तोय ।।
धिन समरथ सत्त सांईयाँ ।। पार न पावे कोय ।।११।।

शिव शंकर निकेवल परमात्मा पानेकी आशा करता और पानेके लिये रात-दिन खंड न करते हुये निकेवल परमात्माको भजता फिर भी साई उसे नही मिलता । ऐसा साई समर्थ है,त्रिकाल सत है,धन्य है । शिव शंकर सरीखे बडे बडे कोई भी उसका पार नही पा सकते ऐसा अपार है ।।११।।

पारबती परले पड़े ।। गिणतन आवे कोय ।।
सिव नेहचळ को जुग लूं ।। सरण तुमारी जोय ।।१२।।

शिव शंकर साई की शरण मे आने से अमर हो गया,निश्चल हो गया,प्रलय मे नही पडा और पारबती ने साई का शरणा स्विकारा नही इसलिये अगिणत याने एक-दो बार नही १०८ बार प्रलय में पडी ।।१२।।

बिशन सरीसा देव सो ।। फिर मोटा अवतार ।।
सो सब सेवे ब्रम्ह कूं ।। निरमल तत्त अपार ।।१३।।

विष्णू सरीखे देवता तथा बडे बडे अवतार ये सभी निरमल तत्त याने जिसका पार लगता नही ऐसे निरमल ब्रम्ह की सेवा करते ।।१३।।

शेंष सिष्ट सिर पर धरी ।। मुख अंतर तुज नाम ।।
ता सिर बोझन आवही ।। धिन सब सारण काम ।।१४।।

शेषनागने मुखमे और हृदयमे तेरा नाम धारण कर सृष्टी सिरपर धारण की इसकारण शेषपर सृष्टीका जरासा भी बोझ नही आता ऐसा साई तू सभीका काम सारनेवाला धन्य है ।।१४।।

मुख मुख जिभ्या दोय हे ।। होय रहया लव लीन ।।
सेस पिछाण्याँ पीव कूं ।। दिल अंतर बिच चीन ।।१५।।

शेषनागको १००० मुख है और हर मुखमे दो-दो जीभ्या है । ऐसे २००० जीभ्यासे शेषनाग रात-दिन तेरा स्मरण करने मे लवलीन हो गया है । इसप्रकार शेषनाग ने दिल मे परमात्मा को पहचान कर परखा है ।।१५।।

निस दिन रटे नि केवळा ।। केवळ ब्रम्ह बिचार ।।

धिन धिन सो सरणा गति ।। पार ब्रम्ह पद सार ।।१६।।

शेषनाग रात-दिन निकेवल परमात्मा को रटता और माया के आसरे के जरासे भी विचार न रखते केवल ब्रम्ह के ही बिचार याने समज रखता । इसकारण उसे पचास करोड योजन धरती का बोजा जरासा भी महसूस नही होता उलटा उस बोजा संभालने मे आनंद आता । इसप्रकार सारवाले पारब्रम्ह पदका शरणा धारनेसे सारवाले पारब्रम्ह पद का शरणा धारनेसे सारवाले पारब्रम्ह के पराक्रम से दु:ख का सुख बन जाता । इसलिये सारवाले पारब्रम्ह पद के शरण की गती धन्य है,धन्य है ।।१६।।

नेहचल निरमल मल नहीं ।। करम न कीट न कोय ।।
आद अंत मध अेक हे ।। अधिक न ओछा होय ।।१७।।

पारब्रम्ह निकेवल होनकाल पारब्रम्ह और मायाके सरीखा चलायमान नही,निश्चल है । होनकाल पारब्रम्हके सरीखा विकारी वासनावो के मल से जरासा भी भरा हुवा नही । विकारो से पूर्ण मुक्त ऐसा मलरहीत निर्मल है । पारब्रम्ह सारपद मे कर्मी के वासनावो का जरासा भी किट नही ऐसा कालरहीत याने जुलमो से और दु:खो से मुक्त है । आदि मे भी वह सभी मे एकसरीखा था,मध्य मे भी याने अभी भी एकसरीखा है और अंत मे भी एकसरीखा रहेगा ऐसा पूर्ण है । वह समयके अनुसार माया के सरीखा जरासा भी छोटा या अधिक नही होता । सदा ही एकसरीखा बना रहता ।।१७।।

धिन तूंहि तुं सांईयाँ ।। धिन तत्त तेरो नाँव ।।
तुम बिन सूनो को नही ।। जंगळ रोही गाँव ।।१८।।

हे साँई तू धन्य है । काल से मुक्त करानेवाले है पारब्रम्ह तत्त तेरा नाम भी धन्य है । हे साँई जंगल,रोही,गाँव,शहरमें तू नही याने तेरे बिना वह जगह सुनी है ऐसी कोई भी जगह ३ लोक १४भवन,३ब्रम्हके १३लोकोमे नही है । १)जंगल,गाँव,शहर खंडीत है,अखंडीत नही । जंगल के क्षेत्र,गाँवके क्षेत्र,शहरके क्षेत्र की मर्यादा है । जंगल उसके क्षेत्रके बाद खतम् हो जाता । गाँव भी उसका क्षेत्रके खतम् हो जाने के बाद खतम् हो जाता । वैसे ही शहर भी उसके क्षेत्र के परे नही रहता परंतु साई अखंडीत है । वह सभीमे भरपूर है । ओतप्रोत है । वह बनमे,गाँव मे,शहरमें सभी जगह में ओत प्रोत है । २)जंगल खतम् हो जानेके बाद आगे का क्षेत्र जंगल नही रहता । जंगल स्वभावसे सुना हो जाता परंतु साई जैसे जंगलमें रहता वैसे ही जंगल जहाँ नही है वहाँ पे भी वह जैसे जंगलमें है वैसेही रहता । उसीप्रकार गाँव और गाँव के क्षेत्र के परे सतसाई सरीखा रहता । इसप्रकार वह सभी जगह ओतप्रोत रहता । उसके सिवा सुनी जगह एक भी नही रहती ।।१८।।

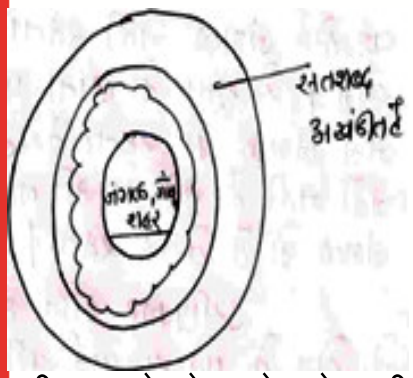

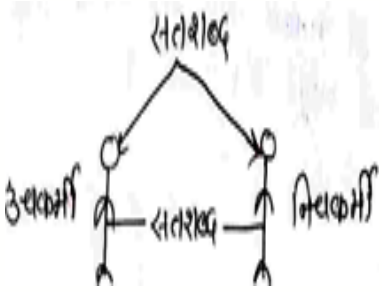

जां देखुं ज्याँ आप हो ।। ऊँच नीच के मांय ।।
अेसा निपट नजीक हो ।। सब जुग भूला जाय ।।१९।।

हे साँई मै जिसको भी देखता हूँ चाहे वे माया मे उँच कर्मी रहे या नीच कर्मी रहे उन सभी मे आपही आप हो । इतने जीव के निकट आदिसे होकर भी सभी जगतके नर–नारी,ज्ञानी,ध्यानी तुझे भूल गये है और भूल रहे है । आप ही आप हो–शतशब्द अखंडित और एकसरीखा है । इसकारण वह उचकर्मी और निचकर्मी व्यक्ती में एकसरीखा ओतप्रोत भरा है ।।१९।।

भरम्यो सब संसार हे ।। चीन सके नहिं कोय ।।
तुम अंतर मे रम रहया ।। बाहिर ढूँढे लोय ।।२०।।

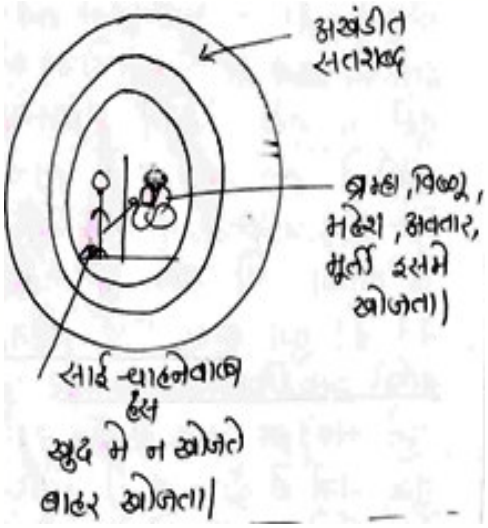

संसार के सभी जीव मन और ५ आत्मा इस माया के कारण त्रिगुणीमाया मे भ्रमित हो गये है इसलिये हृदयमे निकट होकर भी तुझे पा नही सकते । तू इतना आदिसे हंसके हृदय मे रम रहा है फिर भी जगत माया मे भ्रमित होनेके कारण तुझे मायामे बाहर ढूँढ रहे है। तुझे ब्रम्हा, विष्णू,महेश,शक्ति इस त्रिगुणीमाया में ढूँढ रहे। तुझे जप, तप,सतमें ढूँढ रहे। तुझे तिर्थोमे ढूँढ रहे है। तुझे पत्थरो के मूर्तीयोमें ढूँढ रहे है। तुझे भेरु,भोपा,दुर्गा, सितला,सरीखे पापकर्ते देवतावोमे ढूँढ रहे है। इसप्रकार सभी जगतके नर–नारी,ज्ञानी,ध्यानी,आदि से तू साथ मे होने पे भी तुझे पाने मे भूल कर रहे है । अखंडित सतशब्द है मतलब सभी मे एकसरीखा और ओतप्रोत है मतलब जिसे साई चाहिये उसमे वह भरपूर है ।।२०।।

जगत बिचारी क्या करे ।। तुज गत लखी न जाय ।।
बाहिर भीतर केहेत हे ।। अेक निरंजण राय ।।२१।।

जगत यह कहती है,सुनती है की हंसके घटमे और घट के बाहर एकमात्र निरंजनराय ओतप्रोत बिना खंडित भरा है । फिर भी तेरी गती जगतके लखने मे नही आती इसलिये जगत बिचारी तुझे पाने में बाहर ढूँढे सिवा क्या कर सकती ? ।।२१।।

जळ थळ मांहि आप हो ।। साखी भूत समान ।।
जुं रवी जळ प्रकाश हे ।। सब घट मे हर जान ।।२२।।

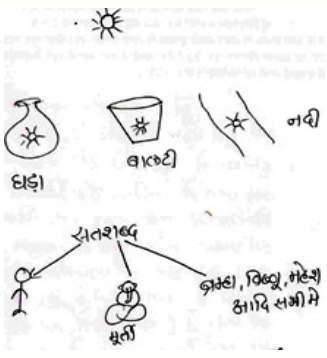

जैसे प्रकाशित सुरज जलसे भरे हुये कुंभमे,नदीमे,या सागरमे दुनियामे कही पे भी देखा तो वह उस जलमे सरीखा ही दिखता है किसीप्रकार कम–जादा नही दिखता। इसीप्रकार साँई जलमे,स्थुलमे तथा हर घटमे एकसरीखा ओतप्रोत रम रहा है याने ही साँई हर

घटमे रम रहा है । वह कैसे हर घटमे रम रहा है यह जलके सुरजके दाखलेकी समज लावोगे तो हर नर–नारी,ज्ञानी, ध्यानीको उसके घटमे ओतप्रोत रमनेका भेद समजेगा । एकसरीखा सत परमात्मा है मतलब खुदके हंसमे भी,सभीमे सत परमात्मा जैसा बिराजमान है वैसाही बिराजमान है । हंसको उसे पाना है । हंसमे बिराजमान होनेके कारण हंसको हंसमें देखना चाहिये,हंससे उसे देखनेकी शुरुवात करनी चाहिये । हंससे देखोगे तो वह प्रगट होगा और प्रगट दिखेगा । हंस छोड्के कहीसे भी देखोगे तो वह प्रगट नही होगा इसलिये अन्य वस्तू में नही दिखेगा ।।२२।।

सूनि सेज न साईयाँ ।। तुम बिन सिरझण हार ।।
जां देखुं जहां आप हो ।। ज्योऊँ ग्यान बिचार ।।२३।।

सत्तज्ञानसे बिचार करता हूँ तो हे सिरजनहार,जहाँ देखता हूँ वहाँ आप ही आप हो ऐसे ज्ञान से दिखता है । आप नही है ऐसी सुनी जगह कही नजर नही आती ।।२३।।

जड़ चेतन पर मिल परे ।। ग्यान ध्यान गुण नेम ।।
तुम काठा किमत सबे ।। प्रीत न प्रसण प्रेम ।।२४।।

जड भी आप ही दिखते हो । चेतन भी आपही दिखते हो । जड और चेतन से बनी हुये वस्तूभी आपही दिखते हो । ग्यान मे भी आप ही,ध्यान मे भी आप ही,रजो,सतो,तमोगुण मे भी आपही,नियममे भी आप ही दिखते हो । तुम काठा किमत हिकमतमे भी आप ही दिखते हो । प्रीत मे भी आपही प्रसन्न मे भी आप ही तथा प्रेम भी आपही दिखते हो । सतशब्द अखंड्ति है इसलिये वह जड मे भी है,चेतन मे भी है तथा जहाँ जड नही और चेतन भी नही वहाँ पे भी है । जड इस वस्तू को झिने दृष्टिसे देखोगे तो दिखेगा की उसमे मूल तो दिखेगा की उसमे मूलमे सतशब्द है और इस सतशब्द के आधार से ही वह माया बनी है ।(ऐसे सभी को लगाव और स्पष्टीकरण करो) ।।२४।।

सुध बुध संक्या आप हो ।। जीव सीव करतार ।।
नारायण निर्लेप हे ।। सासो सोग बिचार ।।२५।।

सुध,बुध,शंकामे भी आपही दिखते हो । जीवमे भी आप,शिवमे भी आप,करतारमे भी आप, नारायण निर्लेपमे भी आप,सासो याने फिकीरमे आप,सोगमे भी आप,बिचारमे आप। इसप्रकार सभी मे आप ही आप दिखते हो ।।२५।।

जत सत्त सांवल सांईयाँ ।। तुम जाचक जगदीस ।।
दाता मान अमान ले ।। तुम ससी तुम बीस ।।२६।।

जत और सत इसके मध्य भी आप ही सामिल हो और स्वामीजी आप ही याचक(माँगनेवाला) और आप ही जगदीश(जगतके ईश)हो । आप ही दाता(देनेवाले)हो । आपही मान लेनेवाले और आपही अपमान लेनेवाले हो । आप ही शशी(अमृत)और विष हो ।।२६।।

सांई धिन धरणी धरा ।। साहिब साचा स्याम ।।
ब्रम्हा बिष्ण उपाविया ।। किशन गोप का राम ।।२७।।

स्वामीजी आप धन्य हो । धरणी(पृथ्वी)धारण करनेवाले आप धन्य हो । आप ही सच्चे साहेब शाम(स्वामी)हो । आपने ही ब्रम्हा,और विष्णू इन्हे उत्पन्न किया और आपने ही कृष्ण और ग्वालिन तथा रामचंद्र इसे भी आपही उत्पन्न किये ।।२७।।

ओऊँ सोऊँ सब किया ।। सगत उपावण हार ।।
धिन तो हि धिन सांईयाँ ।। निरालंम्ब निराकार ।।२८।।

आपने ही ओअम और सोहम इन सभी को उत्पन्न किया । शक्ति को उत्पन्न करनेवाले आप ही हो । धन्य आपको स्वामीजी,आप निरालंब हो ।(किसी पर भी अवलंबित नही रहे)और निराकार(आपका आकार नही है ।)ऐसे आप हो ।।२८।।

निरभे नर नारी नहीं ।। अंजण मंजण कोय ।।
सब बिणसे सब ऊपजे ।। तुम नेहचळ हरि होय ।।२९।।

आप निर्भय हो । आप जगतके पुरुषोके समान पुरुष भी नही और जगतके स्त्रीके समान स्त्री भी नही हो । आपको स्त्री पुरुषोके समान अंजन(इंद्रियाँ)भी नही है और मंजन वगैरे कुछ भी नही है तथा दुसरे सभी उत्पन्न होते है और सभी नाशको प्राप्त होते है और आप हरी मायाके परे होनेके कारण निश्चल हो(चलते नही हो ।)पुरुष,स्त्री,अंजन,मंजन माया है । मरनेवाली खंड्ति है । सतशब्द माया के परे है और न मरनेवाला है ।।२९।।

जुग सारो सब जायगो ।। धर ब्रहमण्ड आकास ।।
सत्त समरथ अेको धणी ।। जांहाँ जुग जीवा आस ।।३०।।

यह सारा संसार जायेगा और धरणी,ब्रम्हांड तथा आकाश भी जायेगा और आप सत्त(सदा रहनेवाले)समर्थ एक ही मालिक हो । जहाँ संसारके जीवोकी आशा है वहाँ आपही हो ।।३०।।

नेहचळ निरभे रामजी ।। सब देवन का देव ।।
दूजा सब उपजे खपे ।। अढळ तुमारी सेव ।।३१।।

आप रामजी निश्चल और निर्भय ऐसे रामजी हो तथा आप सभी देवतावो के भी(ब्रम्हा,विष्णू , महादेवके भी)देव हो । दुसरे सभी देवता उत्पन्न होते और नाशको प्राप्त होते है परंतु आप अटल हो और आपकी सेवा भी अटल है ।(आपकी सेवा करनेवाले भी अटल हो जाते है ।) ।।३१।।

तुम तारण हरि जोग हो ।। तिण सिर अवर न कोय ।।
काळ कर्म दाणो सही ।। सब अनघड़ बस होय ।।३२।।

जीव को तारने योग्य आप ही हो आपसे पराक्रमी दुसरा कोई नही है । ये काल,कर्म और दानव(राक्षस)सब आप अनघड के वश है ।।३२।।

घड़िया घाट अघाट ने ।। नाना बिध का रूप ।।
बलिंहारी उण देव की ।। कीया सबे सरूप ।।३३।।

ये सभी घाट अघाटने(जिसका घाट नही ऐसा अघाटने)गढकर नाना प्रकारके पैदा किये है । उस अघाट देव की बलिहारी है,उसने सभी तरह के स्वरुप उत्पन्न किये है ।।३३।।

अण घड़ आद अमुरती ।। मूरत घड़ी अनेक ।।
धिन बाबा करतार तूं ।। कुदरत को गत देख ।।३४।।

आप स्वयम् अनघड हो और आदि सर्व प्रथम के हो । आप अमुरत होकर आपने अनेक तरहकी मूर्तीयाँ गढाकर पैदा की है । सभीको बनानेवाले आप बाबा कर्तार धन्य हो । आपके कुद्रत की गती कौन समज सकता ।।३४।।

क्या जाणुं केसे कहुँ ।। वार पार नहिं कोय ।।
आप अमुरत बण रहया ।। रंग न रूप न होय ।।३५।।

आप तो अमूर्ती हो रहे हो । आपका तो रंग और रुप कुछ भी नही है फिर मै आपको कैसे जाणु?आप कैसे है?यह कैसे बताउँ?आपका वारपार कुछ भी नही आता ।।३५।।

करे करावे कर दिया ।। दीवी कळा बणाय ।।
धिन तूहिं धिन साईयाँ ।। सुख दु:ख गहया न जाय ।।३६।।

आपही करते हो और आपही करवाते हो और आप ही कर देते हो । आपने सभी कला बना दिया । धन्य आप,धन्य साँई(स्वामी)सुख से भी आपको पकड्ते आता नही तो दु:ख से भी आपको पकड्ते आता नही । ऐसे आप सुख-दु:ख दानो विधीसे पकड्मे आनेके परे हो ।।३६।।

आतम मे प्रमात्मा ।। रमता हे मुझ बीच ।।
सुख दु:ख दोनु पर हच्या ।। कोरा फरक न कीच ।।३७।।

आप मेरे आत्मा मे आदि से हो मतलब मेरे आत्मा ने आदि से ही रम रहे हो फिर भी मै जैसे माया के सुख और काल के दु:ख मे पड्कर दु:ख भोग रहा हूँ वैसे आप मेरे आत्मा मे आदि से रमते हुये भी इन सुख-दु:ख मे जरासे भी अटके नही मतलब आपने माया के सुख दु:ख को त्यागकर स्वयम् को अलग रखा है ।।३७।।

किमत सब करतार की ।। केशो करण किल्याण ।।
बाणी सुण हेत सेज सो ।। घट घट न्यारी जाण ।।३८।।

बाणी सुनना,प्रिती करना,यह हर घट घटमे सहज बनती और हर घट घटकी प्रिती भी न्यारी न्यारी रहती । हर घटमे ऐसी सभी भारी हिकमत करतारने बनाई है । ऐसा वह केशव हर आत्मा का कल्याण करनेवाला है याने सुख देनेवाला है ।।३८।।

तुम बिन अेसी कुण करे ।। अण घड देवा राम ।।
लख चोरांसी जीव सो ।। धरिया ठामो ठाम ।।३९।।

आपने चौरासी लाख प्रकारके जीव जगहके जगह पर उत्पन्न करके रख दिया । हे अनघड देव, हे अनघड राम ऐसा किसीको भी न करते आनेवाला काम आपके सिवा कौन कर सकता है? ।।३९।।

नासत् आ सत सब करी ।। करणी किरपण सूर ।।
के दाता के मंगता ।। सब में सब सूं दूर ।।४०।।

नाश होनेवाला और नाश न होनेवाला ये सभी आपने ही बनाये । सभी करणीया आपने ही बनाई । कंजुश,शुरवीर आपने ही बनाये । कई दाता बनाये । कई मांगनेवाले मंगता बनाये और सबके आत्मा मे ओतप्रोत रमकर भी इन सभी मायावी प्रकृतीयो से दूर रहे ।।४०।।

शिष्य वाक्य-

हाजर सुं हाजर खड़ा ।। जब देखे तब त्यार ।।
गाफल गेला ग्यान बिन ।। कूटि जे संसार ।।४१।।

आपके सम्मुख जो हाजिर है उनसे आप भी हाजिर हो । वे आपको जहाँ देखते है तब नही आप तैयार रहते हो परंतु जो गाफिल ज्ञान के बिना मुर्ख है वे जीव संसार मे पिटे जाते है ।।४१।।

सिष वायक ।।

अेसा इचरज अर्थ सो ।। बूजत सूँ गुरदेव ।।
जीव सिव अेको कहया ।। को पूजे को सेव ।।४२।।

शिष्य बोला ऐसे आश्चर्यकी बात का अर्थ गुरुदेवजी आपसे मै पूछ्ता हूँ कि जीव और शिव एक है करके बताते तो फिर कौन किसको पूजता है और कौन किसकी सेवा करता है ? ।।४२।।

कुण दाणो कुण जम हे ।। कुण दाता को सूर ।।
को मेला को निर्मला ।। क्या नेड़ा क्या दूर ।।४३।।

राक्षस कौन है और यम कौन है और दाता याने देनेवाला कौन है तथा शूर याने रणवीर कौन है? मैला कौन है और निर्मल कौन है? पास मे क्या है तथा दूर क्या है?।।४३।।

लख चोरासी जीव सो ।। सोऊँ आतम राम ।।
इण बिण दूजा को नही ।। तीन लोक बिसराम ।।४४।।

ओअम यही राम है,यही शीव है । चौरासी लाख जीव ये सभी आत्मा ओअम से उत्पन्न हुयी इसलिए सभी ओअम ही है,ओअम सिवा और कोई नही है मतलब ये सभी आत्मा,सभी जीव राम ही है याने शिव ही है याने ओअम ही है । ओअम यह जीव से कोई निराला है ऐसा नही है मतलब ओअम के सिवा जीव अलग नही है । यही ओअम जीव के रुपमे तीन लोक चौदा भवन मे सभी जगह छाया हुवा है याने विश्राम कर रहा है। ।।४४।।

जम दाणुं क्या देवतां ।। ब्रम्हा विष्ण महेस ।।
ओऊँ की उतपत सबे ।। स्वर्ग रसातळ सेस ।।४५।।

यम,दानव(राक्षस)क्या और देव–ब्रम्हा,विष्णू,महादेव ये सभी ओअम से उत्पन्न हुये है । स्वर्ग क्या और रसातल(सातो पाताल)और शेष ये सभी ओअम से उत्पन्न हुये है ।।।४५।।

आवत जावत राम हो ।। दया करे अनेक ।।
जड़ चेतन ग्यानी गुणी ।। सब मध ओऊँ पेख ।।४६।।

आनेवाला और जानेवाला राम याने ओअम ही है और यह अनेक तरह से दया करता है । जड तथा चैतन्य और ज्ञानी और गुणी इन सभी में ओअम दिखाई देता है ।।।४६।।

क्या पूजुं किस कूं तजुं ।। ज्याँ त्याँ में ई होय ।।
करमा करके भरमना ।। तांसु दिसे दोय ।।४७।।

शिष्य सोचता है की मै और ओअम एक ही हुँ मतलब जहाँ–तहाँ तो मै ही मै हूँ तो मै किसे पुजूँ और किसे छोडूँ । जिवोको मै और ओअम दो अलग है ऐसा जो दिखाई देता है यह उन्हे भ्रम हुवा है । यह भ्रम कर्मोके कारण उत्पन्न हुवा है । भ्रम दूर हो जानेपर मै और ओअम एक ही है,ऐसा दिखाई देगा । ।।४७।।

गुरु वाक्य–

कर्म भर्म अे किण किया ।। कोण उपावण हार ।।
तुम ओऊँ सत्त था पियो ।। ओ मुझ देवो बिचार ।।४८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने शिष्यको प्रश्न किया कि,कर्म और भ्रम यह किसने बनाया ?इस कर्म और भ्रम को उत्पन्न करनेवाला कौन है?आपने ओअम को सत्त कहकर स्थापना की तो इसका मुझे विचार बतावो कि ओअम यह सत्त है क्या? ।।४८।।

शिष्य वाक्य–

सुख दु:ख सुं न्यारा रहे ।। पाप पुन्य तज बाद ।।
ओऊं सो सब लेत हे ।। पर मळ वास सुवास ।।४९।।

शिष्य उत्तर देता है कि,सुख और दु:खसे अलग रहता है और पाप तथा पुण्य का विवाद छोड देता है और ओअम से सभी सुगंध सुवास लेते है ।।४९।।

सुख दुख सामल राम हो ।। पाप पुन्य के मांय ।।
ओऊँ की उतपत सबे ।। न्यारा शब्द बताय ।।५०।।

सुख और दु:ख मे रामजी ही ओअम ही शामिल है । सुख और दु:ख मे रामजी याने ओअम अलग नही है । पाप और पुण्य करनेमे भी रामजी याने ओअम शामिल है ही और यह सभी ओअम की उत्पत्ती है । ओअम के अलावा कोई भी दुसरा शब्द अलग हो तो वह मुझे बताइये ? ।।५०।।

गुरु वाक्य–

ता संग सुख दुख अेक नही ।। मन पवना नहिं लार ।।
सुरत निरत पूंचे नहिं ।। सो सत्त शब्द बिचार ।।५१।।

जिसके साथ मायावी सुख और दुख एक भी नही है । मन और श्वास(साँस)नही है तथा

वहाँ सुरत और निरत ये भी नही पहुँचती है ऐसा जो सतशब्द है उसका विचार करो।५१।

ओऊँ के आगे खड़ो ।। अेक निरंजण राय ।।
धिन सत साहिब साईयाँ ।। वाँ लग काळ ना जाय ।।५२।।

ओअम इस मायाके उपर एक निरंजनराय यह काल रुपमे सदा खडा है । उस निरंजनराय कालके उपर सतसाहेब है। वह सतसाहेब धन्य है। यह काल ओअम इस माया से बलवान होने के कारण यह ओअम इस माया मे रचमच के घुसा रहता और दु:ख देता परंतु इस सतशब्दके याने सतसाहेब के निकट भी नही पहुँचता इसकारण ओअमके शरणमे रहनेवाले हंसो को काल सदा दु:ख देते रहता और सतशब्द के शरण में रहनेवाले हंसो को दु:ख देने के लिये जरासा भी निकट भी नही जा सकता ऐसा सतसाई हंसो को काल के दु:ख से छुडाने के लिये धन्य है ।।५२।।

ओऊँ अंछया आतमा ।। परमातम रंरकार ।।
तांहि सुं निरलेप हे ।। अंछया आद बिचार ।।५३।।

ओअम,इच्छा याने त्रिगुणीमाया,आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी ऐसी पांचो आत्मा,मन, परमात्मा याने होनकाल ईश्वर ररंकार याने सभी ब्रम्ह हंस इन सभीसे सतसाई न्यारा है । इसलिये सतसाई की इच्छा याने चाहना यही सर्व उपर याने श्रेष्ठ है ।।५३।।

तासुं समंदर पाटियो ।। तिरिया गिर वर पहाड़ ।।
सो सत्तस्वरूपी शब्द हे ।। रिष जन ताके बाड ।।५४।।

जिसके योग से रामचंद्र ने समुद्रपर पूल बांधा और जिसके योग से समुद्रपर पहाड तैरने लगे और सेतू बनाया गया । वह सतस्वरुपी शब्द है परंतु उस शब्द के चारो तरफ ऋषी और त्रिगुणी मायावी संत ये बाड याने जब्बर कुंपण है । ।।५४।।

धिन धिन शब्द स्वरूप धिन ।। दिष्ट मुष्ट नहि माय ।।
अधिक न ऊंडा उतावळा ।। आव न बैठ न जाय ।।५५।।

शब्द धन्य है वह सत्तस्वरुप शब्द धन्य है । वह सतशब्द और सतस्वरुप आँखो मे नही आता है और मुट्ठी मे पकडे नही जाता है । वह माया के समान अधिक भी नही,गहरा भी नही और उतावला भी नही है और वह माया के समान आता भी नही,बैठता भी नही और जाता भी नही है ।।५५।।

हळका ना भारी घणा ।। चवड़ा चित्त न ओख ।।
बूढा नहि बाळक काहा ।। सरग नरक नहि मोख ।।५६।।

वह हलका भी नही,भारी भी नही और बहुत भी नही है । चौडा चित भी नही और वह त्रिगुणी माया के समान बिकट भी नही हैं । वह जगत के लोगो के समान बूढा भी नही और बालक भी नही । वह स्वर्ग भी नही है और नर्क भी नही है ।।५६।।

परण्या पाल्यां वह नही ।। ब्यावन चावन नार ।।

जोगन भोगन भर्मना ।। तारण ना तिरण न मार ।।५७।।

वह अष्टांग जोगके समान मायावी जोग है वैसे जोग भी नही। वह होनकाल पारब्रम्हके समान भोगी भी नही। वह त्रिगुणी मायाके असत्य सुख सत्य लगनेवाले समान भ्रम भी नही । वह महाप्रलय तक विष्णूके समान तारनेवाला भी नही और महाप्रलय तक तरनेवाले जीवोके समान तरनेवाला जीव भी नही और आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वीके समान मरनेवाले पांच तत्वोके समान मरनेवाला भी नही। वह जगतके नर–नारी सरीखा शादीसुदा भी नही। उसे विवाह करनेकी चाहना भी नही तथा जगतके लोगो समान नर या नारी यह कुछ भी नही ।।५७।।

ऊँचा नहिं अस्मान में ।। नीचा जमी न होय ।।
गुप्ता नहिं प्रगट परे ।। साच न झूट न कोय ।।५८।।

वह उँचाई पर आकाशमे अनड पंछी समान भी नही और निचे जमीनके देह सरीखा जमीनपर भी नही है और वह हंसको नही समजेगा ऐसा गुप्त भी नही और हंसो को समजेगा ऐसा देहरुप से प्रगट भी नही। वह इस गुप्त और प्रगट के आगे होनकाल ब्रम्ह सरीखा सत्य और त्रिगुणी माया सरीखा झूठ भी नही ।।५८।।

पतला जाड़ा ना बण्या ।। झीणो सार न तार ।।
अंमर में परले पड़े ।। आगे मध न लार ।।५९।।

वह ओअम,सोहम शब्द समान झीना याने एकदम बारीक भी नही । वह होनकाल पारब्रम्ह समान जीवको महाप्रलय मे कालके मुख मे न पडने देनेवाला सार भी नही तथा त्रिगुणी माया सरीखा महाप्रलय मे मिटनेवाला असार भी नही। वह महाप्रलय तक तारनेवाली विष्णू,शक्ती सरीखी माया भी नही। वह होनकाल पारब्रम्ह समान अमर भी नही और महाप्रलय मे प्रलय मे जानेवाली त्रिगुणी माया भी नही। वह आज नही है और आगे रहेगी या वह पिछे भी नही थी और आगे भी नही रहेगी परंतु आज है या वह पिछे थी परंतु आज नही आगे भी नही रहेगी ऐसी त्रिगुणी माया भी नही है ।।५९।।

जो चितवे तेसा बण्या ।। अेसा इचरज खेल ।।
देवे लेवे कुछ नहीं ।। हेत न बेर न पेल ।।६०।।

उसे जो कोई जिस रुप मे चितवन करता है वह वैसा ही बन जाता है ऐसा आश्चर्य जनक खेल है। वह जगत के लोगो समान देना या लेना कुछ भी नही करता । वह जगत के नर–नारी समान किसी जीव से दोस्ती भी नही करता या दुश्मनी भी नही करता ।।६०।।

परसण नहिं परलोक हे ।। रेत न राव न रंक ।।
आप अमूरत साईयाँ ।। ब्रोधन बादन संक ।।६१।।

वह प्रसन्न भी होता नही । वह परलोक भी नही और रयत याने प्रजा भी नही और राजा भी नही और रंक भी नही है । वह खुद अमूर्ती साई याने स्वामी है । वह जगत के नर–

नारीयो के समान किसीका विरोध भी नही करता और वाद भी करता नही और किसी की शंका मुलहिजा नही करता तथा भय भी नही मानता है ।।६१।।

सब में सामल साथ हो ।। सब सूं न्यारा राम ।।
जेसी जीव की भावना ।। तैसा सारो काम ।।६२।।

वह सभीमे सामिल है याने साथमे है और सभीके अंदर रहते हुये सभीसे अलग ऐसा राम है । जैसी जीव की भावना रही वैसेही वह साई उस जीव का कार्य पूर्ण करता ।(जैसे प्रल्हाद का नरसिंह रुप मे ।)।।६२।।

जोगी जंगम सेवड़ा ।। षट दर्शण सब लोय ।।
आसा जहाँ बासा करो ।। आप निराला होय ।।६३।।

योगी (कनफटे),जंगम (गले मे लिंग बांधनेवाले)सेवड़ा (बाल उखाड़नेवाले,मुख पे पट्टी बांधनेवाले)ये छःदर्शन और सभी लोक,जिसकी जहाँ आशा रहती वही आप जाकर प्रगट होते हो और आप सभी से अलग रहते हो ।।६३।।

गुण किमत थाहा पार नी ।। लागे अर्थ अनेक ।।
सुर नर मुनि पच रहया ।। कुदरत तुज नहिं पेक ।।६४।।

आपके हिकमत और गुणोकी थाह या पार नही आता और लोग अनेक तरहके तरक लगाते है। परंतु आपकी थाह या पार किसी को भी मिला नही । अपनी-अपनी बुध्दी के प्रमाणसे सभी तरक करते है। सभी सुर याने देव,नर याने मनुष्य और मुनी याने नारद, वशिष्ठादी सभी पच रहे परंतु आपकी कुद्रत किसी के समज मे आयी नही ।।६४।।

खण्ड जहाँ तुं थळ करे ।। भरिया जहाँ सुष जाय ।।
मुवां कूं जिवाड़ ले ।। अमर जंवरो खाय ।।६५।।

जहाँ खंड पडा हुवा है उस खंड्की जगह आप स्थल करते हो और जो भरा हुवा है उसे सुखा देते हो और मरे हुये को जिवीत कर देते हो और जो अमर याने जिवीत है उसे जंवराके द्वारा मरवा देते हो । आपको लगे वो आप कर सकते हो । ।।६५।।

अेसी कुदरत सांईयाँ ।। ओथ पोथ जगदीस ।।
राजा कूं सो रंक करे ।। भिक्षक बण्या बोहो ईस ।।६६।।

स्वामी,आपकी कुद्रत ऐसी है की आप खुदको पूर्ण जगत मे ओत-प्रोत समाके रखते हो और जगत को सुख पहुँचाने के लिये और काल के दु:ख से निकालने के लिये ईश्वर बने रहते हो । आप अतृप्त रहने पे राजा को रंक कर देते हो और तृप्त होने पे भिक्षुक याने रंक को राजा याने ऐश्वर्यवान कर देते हो ।।६६।।

तम तुठां सब होत हे ।। मोख मुगत गत पार ।।
ज्युँ चोपड़ का खेल में ।। पासो जीतण सार ।।६७।।

आप प्रसन्न हो जाने पर सब कुछ हो सकता है । मोक्ष,मुक्ती,गती,पार आदि आप तुष्ट

याने प्रसन्न होने पर हो सकता है । जैसे चौसर के खेलमे दाव जितानेवाला होता है उसीतरह आप प्रसन्न होने पे जीवो को परमपद मोक्ष मिला देनेवाले है ।।६७।।

जीवा के बस कुछ नहीं ।। करो करावो आप ।।
कर्म धर्म कळ आप ।। बस छेड़ो पुन न पाप ।।६८।।

इस जीव के वश मे कुछ भी नही है । करनेवाले और करानेवाले आप ही हो । कर्म और धर्म इनकी सभी कला आपके ही वश मे है ।।६८।।

जीवा कूं प्रदोष दो ।। आप निराळा होय ।।
तम पर बारी किण किया ।। धर्म कर्म मिल दोय ।।६९।।

जीवोके उपर दोष देते हो,कर्म करानेवाले आप हो,जीवोसे कर्म आप ही कराते हो और उस कर्मका दोष जीवके उपर देकर आप अलग हो जाते हो परंतु आपके अलावा दुसरा यह धर्म व कर्म किसने किया?धर्म व कर्म ये दोनो बनानेवाला और भी कोई दुसरा था क्या? ।।६९।।

आद उपाया आपने ।। सांसो सोग बिचार ।।
तां पीछे जुग जीव सो ।। भुगते बारं बार ।।७०।।

सर्व प्रथम तो आपने ही सांसा याने फिकीर,सोग इसके विचार जगत मे उत्पन्न किये । ये आपके उत्पन्न करने के बाद ही संसार के जीव बारंबार भोग रहे है ।।७०।।

गेला अलख बणाविया ।। गिणत न आवे कोय ।।
तुम घालो जिण गेल कुं ।। बूई जावे लोय ।।७१।।

आपने ही रास्ते(धर्म पंथ और मत-मतांतर)इतने बना दिये की वे समझमे भी नही आते है । इतने रास्ते(धर्म पंथ और मत-मतांतर)बना दिये की वे गिने नही जाते है । आप लोगो को जिस रास्ते मे डालते हो उसी रास्ते से सभी जीव चले जाते है ।।७१।।

के डूबण की गेल हे ।। तिरणे की करतार ।।
धिन धिन हो धरणी धरा ।। सब जुग कियो बिचार ।।७२।।

कितने ही डूबने के रास्ते है तो कितने ही तिरने के रास्ते है । तो कर्तार ये सभी रास्ते आपके ही बनाये हुये है । और आप जीव को जिस रास्ते पर डालते हो उसी रास्ते से जीव चलता है फिर इसमे जीव का क्या दोष? तो आप धरणी धरा(सृष्टीको धारन करनेवाले)धन्य हो,धन्य हो । सारे जगतमे विचार किया तो आप ही धन्य हो ।।७२।।

देवत दाणु सब किया ।। धर बहमण्ड आकास ।।
एक शब्द सुं रच दिया ।। तीन लोक सब बास ।।७३।।

आपने सभी दैवत किये । और सभी दानव याने राक्षस बनाये । आपने धरती,ब्रम्हांड और आकाश यह सभी बनाये । आपने एक शब्दसे सभी तीन लोककी रचना करके सभी पुरीयाँ रच दी ।।७३।।

कांहाँ लग करूं बखाण मै ।। वार न पार न छेह ।।
मात न बाप न तात बिन ।। काया काम न देह ।।७४।।

आपका मैं कहाँ तक बखाण करुँ?आपका वार–पार,अंत कुछ मिलता नही है । आप माँ –बापके बिना और तात के बिना है और आपको काया और काम भी नही है । आप देह के बिना देह के हो ।।७४।।

ओपत नेपत बीज बिन ।। जाया जनम न कोय ।।
आपो आप अमुर्ति ।। अवर न दूजो होय ।।७५।।

आपकी उत्पत्ती भी नही और आप पैदा भी नही हुये और आप बिज के बिना है । आप जन्मे भी नही और पैदा भी नही हुये । आप स्वयंके स्वयंही अमूर्ती हो । औरोके सरीखे याने दुजे के सरीखो पर आसरेसे बने हुये नही हो ।।७५।।

तम सुं सब ही नीसरे ।। पाछा फेर संभाय ।।
तम नेहचल निर्भे सदा ।। आवन इसकन जाय ।।७६।।

आपसे ही सभी निकले है और ये सभी पुन: आपमे ही समा जायेंगे और आप निश्चल हो, निर्भय याने भयरहीत और सदा याने हमेशा रहनेवाले,आने–जानेवाले न होकर,आकर किसी का इष्क भी नही करते हो ।।७६।।

हाल न चाल न डोल हे ।। इत उत दिस न कोय ।।
बायर भीतर सुनं हे ।। इत उत साहेब होय ।।७७।।

आप हिलते नही,चलते नही और झामगाते भी नही । यहाँ या वहाँ कही भी दिखाई नही देते हो । बाहर,अंदर तथा सुन्न जगह ऐसे सभी जगह मे आप साहेब हो ही हो ।।७७।।

साचा समरथ सांईयाँ ।। ने चल चले न खीण ।।
तुम डाढी सत्त गाय बी ।। मै ताराँ जुग बीण ।।७८।।

सच्चे समर्थ स्वामी निश्चल हो और आप क्षय नही होते हो । आप गायन करनेवाले,सच्चे गानेवाले हो और मै आपके बीणा का तार हूँ ।।७८।।

जैसे आप बजाव हो ।। तैसे बाजण हार ।।
दोस न दीजो साईयाँ ।। निरधारा आधार ।।७९।।

जैसे आप(गानेवाले)बीणा को बजावोगे वैसे वह बजेगा । बीणा बजानेवालेके आधीन है,बीणा अपने मनसे कोई बजती नही है । आप बीणाको जैसे बजावोगे वैसा ही वह बजेगा । तो बीणा को दोष मत दो,बीणा निराधार है,बिणा को बजानेवाले का आधार है वैसे सभी जीव निराधार है और आप उन सभी के आधार हो ।।७९।।

बलि जाऊँ सत शब्द की ।। वार फेर दुँ प्राण ।।
जिण मोकूं पेदा कियो ।। तन मन दीयो आण ।।८०।।

मै आपके सतशब्द पर बलिहारी हूँ । जिसने मुझे पैदा किया है और मुझे यह शरीर व मन

लाकर दिया है ऐसे सतशब्द के उपर अपना प्राण न्यौछावर कर देता हूँ ।।८०।।

नख चख सरब बणाविया ।। खंड ब्रहमंड पिंड मांय ।।
धिन समरथ अेको धणी ।। तो गत लखी न जाय ।।८१।।

आपने मेरे नाखून और आँखें सभी बनाकर मेरा शरीर बनाया है और इस शरीर मे खंड और ब्रम्हांड की सभी रचना बना दी है । धन्य हो सम्रथ,आप ऐसे एक ही मालिक हो । आपकी गती पहचानने मे नही आती ।।८१।।

कीडि कुंजर आद ले ।। धरी सबे अे नाण ।।
पाँचुं इन्द्रि आतमा ।। नव खंड पृथ्वी जाण ।।८२।।

चींटी और हाथी आदि इनके सभी निशान याने चिन्ह अलग-अलग बनाये ।(जिसके कारण सभी पहचाने जाते है कि यह चिंटी है और यह हाथी है । ऐसे बनाये हुये निशानों से पहचाने जाते है ।)ये पाँचो इंद्रियाँ और आत्मा और इस पृथ्वी के नौखंड ये सभी निशान से जाने जाते है ।।८२।।

तीनु चवदे लोक सो ।। सब धर ओ बेराट ।।
बाहिर भीतर सुत ले ।। कीया अेकण घाट ।।८३।।

तीनो लोक और चौदह भुवन तथा सारी धरती और यह वैराट बाहर से और अंदर से सूत से याने सोच समझकर एक ही घट में बना दिये ।।८३।।

अवगत अलख अपार तुं ।। निमो निमो निरलंब ।।
तूंहि तुं सत्त साच हे ।। परापरी पर झंब ।।८४।।

अविगत याने आपकी गती नही है,अलख याने आप समझमे नही आते,अपार याने आपका पार भी नही आता है ऐसे आप हो। आपको नमस्कार है,नमस्कार है। आप किसी पे भी अवलंबीत नही हो ऐसे निरालंब हो। आप सत हो,आप सच्चे हो। आप परापरी से हो ।।८४।।

अेसा तत्त बणाविया ।। धरिया या घट मांय ।।
गंगा जमना सुरसती ।। चंद सूर बोहो लाय ।।८५।।

ऐसा तत्त आपने बनाकर इस घट मे रख दिया। इसी घट में गंगा,जमुना,सरस्वती, (इडा,पिंगला,सुषमणा)चंद्र और सूर्य ऐसे बहुत से लाकर इस घट मे रख दिये ।।८५।।

तारा मंडळ देवता ।। धर ब्रहमंड आकास ।।
काया में सारा धरत ।। सिमरथ सासो सास ।।८६।।

तारामंड्ल,देवता,धरणी,ब्रम्हांड,आकाश इस शरीरमे सभी रख दिये और इस शरीरमे श्वासो-श्वास रख दिया ऐसे आप समर्थ हो ।।८६।।

बादल बीजल दामणी ।। इंदर अेसा होय ।।
घट घट साहेब सब किया ।। बिरला चीने कोय ।।८७।।

आप साहेब बादल,बिजली,दामिणी,इंद्र ऐसे जो जो है,ये सभी घट-घटमे बना दिये । आप ऐसे समर्थशाली हो । आपको बिरला ही कोई पहचानता है ।।८७।।

ग्यान ध्यान जत जोग ले ।। अमृत मीठी बाण ।।
काया मध सब घर दिया ।। नव तत्त च्यारू खाण ।।८८।।

ज्ञान,ध्यान,जत्त याने ब्रम्हचर्य,योग तक और अमृत जैसी मीठी बोली ये सभी इस शरीर मे ही रख दिये । इस शरीर मे नौ तत्व और चारो खाणीयाँ रख दिये ।।८८।।

पेम नेम प्रतीत सो ।। ब्रेह बात बैराग ।।
सुध बुध सारी अकल ले ।। धरिया जागो जाग ।।८९।।

प्रेम,नियम,प्रतीती,याने विश्वास बिरह,बाते,वैराग्य,सुध्दी,बुध्दी,सभी अक्ल ये सभी लेकर सब जगह की जगह रख दिये ।।८९।।

किरचा किरचा बणाय कर ।। जोडया सकल सरीर ।।
तां मध क्या क्या तें किया ।। पेम नेम गुण पीर ।।९०।।

इस शरीर को लगनेवाले सभी टुकडे-टुकडे बनाये और वे जोड्कर यह शरीर बनाया और इस शरीर मे आपने प्रेम,नियम,गुण,ऐसे बनाये ।।९०।।

पाप न पुन न कामना ।। दीया सबे बणाय ।।
तामस तरक न रीस ले ।। भरदी सब घट मांय ।।९१।।

पाप और पुण्य तथा कामना यह सभी बना दिये । क्रोध,तर्क,रीस,रागीटपना,यह सभी लेकर घट में भर दिये ।।९१।।

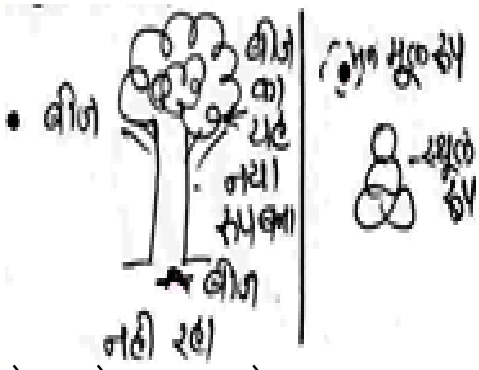

अवगत आतम आपले ।। पलटया मूल निध्यान ।।
अेके सुबो हो ऊपजी ।। तर वर बीज न पान ।।९२।।

आपने मेरी अविगत आत्मा मुलमे जैसी थी उस मूलको ही पूर्ण पलटा दिया। जैसे एक बीजसे पेड,पत्ते और अनेक बीज लगते है और जिस बीजसे पेड,पत्ते,अनेक बीज लगे वह बीज मूल बीज अस्तित्व मे नही दिखता वह पेड,पत्ते इन रुपमे बन जाता । इसीप्रकार मेरे अविगत आत्माका मूल सुक्ष्मरुप पलट गया और मायाका स्थूल रुप आ गया ।।९२।।

समरथ तेरी साईयाँ ।। क्या के गाऊँ तोय ।।
मेरे जिभ्या अेक हे ।। तु घण नामी होय ।।९३।।

समर्थवान स्वामी,आपका मैं क्या कहकर,यश कैसे वर्णन करु?मुझे तो एक जीभ है और आपके बहुत नाम होने से आप घण नामी है ।।९३।।

कैसे सिंवरू साइयाँ ।। सेवा मुझ बताय ।।
तें चाला बोहो चालिया ।। तामे भर्म न काय ।।९४।।

अब मै आपकी किस तरह से सेवा करुँ?आपकी सेवा कैसे की जाय?यह मुझे बतावो? आपने बहुत तरह के चाले बना दिये और उन चालो मे भ्रम डाल दिये ।।९४।।

पेड न डाळ फळ पात जुं ।। लीला करी अनेक ।।
अंस दाखल सब ठोड हो ।। ने चल कहाँ जन पेख ।।९५।।

आपने एक ही बीज से पेड व पेड की अनेक डाले,फल,पत्ते बनाये व इसप्रकार अनेक तरह की लिला कर दी । आप इस तरह से सभी जगह हो फिर भी निश्चल हो । आपको संतो ने कहाँ देखना ।।९५।।

पान पात फळ डाल कूं ।। असत न किवी जाय ।।
नेहचल निर्भे न रहे ।। ओ सांसो मुज मांय ।।९६।।

पत्ते,टहनियाँ,फल,डालियाँ इसे असत याने झूठी कहते नही आता । उन्हें झूठा तो कहाँ नही जाता,परंतु ये निश्चल नही रहते है । डालियाँ,पत्ते,फल-फूल इनका सभीका नाश होता है और प्रत्यक्ष भी दिखाई देता है । इसलिये इन्हें झूठा कहाँ नही जाता,परंतु इसका नाश हो जाता है । इसकी मुझे चिंता है ।।९६।।

नाव तुमारा साइयाँ ।। गिणत न आवे कोय ।।
अखर आद सरूप वे ।। सो बगसो सच मोय ।।९७।।

स्वामीजी,आपके नामो की गिनती करने से गिनती नही हो सकती है परंतु अक्षर जो क्षर नही ऐसा वो क्षय नही पानेवाला आदि स्वरुपी जो आपका नाम है वह नाम मुझे दो ।९७।

ताते तुम हम को मिलो ।। मै तो में गर काब ।।
सो सिंवरण दीजे सही ।। सुण सत्त मेरो जाब ।।९८।।

जिस नाम का स्मरण करने से आप मुझे मिलोगे और जिस नाम का स्मरण करके मै आप मे मिल जाउँ ऐसा नाम मुझे दो । यह मेरी सच्ची चाहना सुनो ।।९८।।

आकारी केता मिलो ।। रूम रूम तम होय ।।
पतिव्रता सत्त पीव बिन ।। दूजो कहे न कोय ।।९९।।

जिसने जिसने आकार धारन किया हो ऐसे आकारी मुझे कितने भी मिले तो भी वे मेरे मेरे रोम-रोम मे नही समा सकते । सिर्फ आप ही मेरे रोम-रोम मे समा सकते इसलिये आप मेरे रोम-रोम मे हो जावो । जैसे पतीव्रता स्त्री अपने सच्चे पती के सिवा दुसरे को पती कहती नही उसी तरह से मेरे रोम-रोम में आपही होना चाहिये ।।९९।।

मेरी इंच्छा आप सूं ।। सत स्वरूपी राम ।।
बीज सरूपी ब्रम्ह हे ।। पात सरूपी धाम ।।१००।।

सतस्वरुपी रामजी आप मुझमे प्रगट होवो यही मेरी इच्छा है । ब्रम्ह यह बीज समान है उससे उत्पत्ती है । माया यह पात समान है याने मरनेवाली है । उत्पत्ती और मरना इसके परे आप है । मुझे उत्पत्ती में और मरने मे नही रखना है इसलिये आप मुझमे प्रगट होवो

जिससे उत्पत्ती और मरना मेरा मिट जायेगा ।।१००।।

आवां गवण न ऊपजू ।। जीवन खोज मिटाय ।।
अेसी कर करतार तुं ।। काळ न झाँपे आय ।।१०१।।

मै आवागमन मे नही उत्पन्न होना चाहिये। माया मे जिवीत रहने का मेरा चिन्ह मिटा दो तो हे सतस्वरुप कर्ता पुरुष मुझे ऐसा बना दो कि मेरे उपर काल झडप न लगा पाये ।।१०१।।

मै सरणा गत साईयाँ ।। अवगत आतम राम ।।
आसा तृष्णा मेट हो ।। परसण कर सब काम ।।१०२।।

स्वामी,मै तुम्हारे शरण में हूँ । तुम अविगत हो और मै आत्माके रामजी आपकेही शरण हूँ। मेरी माया के सुखो की आशा और तृष्णा मिटा दो ।।१०२।।

कृपा कर किरता निधे ।। चरणा राखो मोय
निरमल की ज्यो आतमा ।। सिंवरावो हरि तोय ।।१०३।।

आप प्रसन्न होकर होनकाल कर्ताको न देकर आपके ही चरणोंमे मुझे रखो और मेरी आत्मा निर्मल करके आपका ही स्मरण करने को मुझे लगावो ।।१०३।।

अेसो बल बैराग दे ।। मोह न माया खंड ।।
निरपख कर संसार सुं ।। तुज सेती सब मंड ।।१०४।।

मुझे ऐसा वैराग्य दो,की मुझे मोह माया उत्पन्न न होवे और मोह माया के द्वारा वैराग्य मे खंड नही पडे। इस संसार से मुझे अलग कर दो और आपसे ही पुरी लगन लगा दो ।।१०४।।

पाँचु पिसण पछाड़ हो ।। परमेश्वर प्यारा ।।
निश दिन तोहि न बीसरूं ।। कर जन का सारा ।।१०५।।

ये मेरे पाँचो वैरी(काम,क्रोध,लोभ,मोह,मत्सर)इन्हें भगा दो और आप परमेश्वर मेरे प्यारे बने रहो और रात-दिन मै आपको नही बिसरुं ऐसी मेरी लगन लगा दो ।।१०५।।

काम क्रोध अहंकार कूं ।। पालो परमानंद ।।
साहिब सरणे राख हो ।। जन का काटो फंद ।।१०६।।

इस काम,क्रोध,अहंकार इनसे मुझे बचावो और साहेब मुझे आप अपनी शरण मे रखकर मेरे सभी फंद काट डालो ।।१०६।।

मेंतें दुबध्या मेट हो ।। नारायण निरलेप ।।
तो सुं कदे न ओचठुं ।। अेसा चित में चेप ।।१०७।।

मै और आप ऐसी मेरी दुबध्या मिटा दो । हे नारायण निर्लेप,आपसे मै कभी भी उब न पाऊँ ऐसा मेरा चित्त आपमे टिका दो ।।१०७।।

धेष धाष दूरा करो ।। धरणी धर भरतार ।।

अेसो सत्त पठाव ज्यो ।। जूळुं तुमारी लार ।।१०८।।

ये सभी द्वेष,धास दूर करके सभी मिटा दो । आप धरणी धरा मेरे मालिक हो । और मेरे लिये आपके साथ जल जाऊँ। ऐसा सत्त भेज दो । जैसे सती स्त्री मे सत्त आने से वह अपने मृत पती के साथ जल जाती है,वैसेही आपके लिये मै मेरा प्राण तक दे दूँ ऐसा सत्त मुझमे भेज दो ।।१०८।।

चाय बिषे रस मेट हा ।। हरजी हरो बिराध ।।
आन उपासी दूर कर ।। कीजो अपनो साध ।।१०९।।

मेरे मनमे जो कोई विकारी चाहना है वह मिटा दो और पाँचो विषयोके विषयरस इनकी भी चाहना मिटा दो और जो कोई भी बाधा डालनेवाली बाते है उन सभी का हरण करो । और अन्य मायाकी उपासना(दुसरेकी उपासना करना ये मुझसे दूर करो और दुसरोकी उपासना करनेवाले भी)मुझसे दूर करके मुझे आपकी साधना करनेवाला भक्त बना दो ।।१०९।।

चिंता चित्त बिन आस का ।। मेटो अवगत नाथ ।।
कृपा कर केसो धणी ।। राख तुमारे साथ ।।११०।।

मेरी मन की चिंता और चितवन तथा मनकी मायाकी आशा ये सभी मिटा दो । आप अविगत मेरे नाथ हो और कृपा करके मुझे हे मालक,आप अपने साथ रखो ।।११०।।

सिकल बिकल मन मेट हो ।। नेचल कर जगदिस ।।
अेसी दृढता धार दे ।। पूरण बिस्वाबीस ।।१११।।

यह मेरे मन का संकल्प-विकल्प करना मिटा दो । हे जगदिश याने जगतके ईश इस मेरे मन को निश्चल करा दो । मेरे मनमे ऐसी पूर्ण दृढता धारन करा दो की मेरा मन आपमे बी-बीसवे पक्का कर दो ।।१११।।

पाप न पुन न दूर कर ।। सोग भिन्न सांसो मेट ।।
बीज जलावो आत्मा ।। अवगत सुं कर भेट ।।११२।।

मेरे पाप और पुण्य ये भी दूर करके सोग याने मरनेवाले का दुख होना और भिन्न द्वेतपणा और चिंता ये सभी मिटा दो । बीज याने त्रिगुणी माया के सार पाँच विकारी सुख भोगने की वासना जिसकारण भोग-भोगने के लिये जनम लेना पड्ता है ऐसी वासना जला दो और इस आत्मा की अविगत राम आपसे भेट करा दो ।।११२।।

भर्म कर्म भै भांज हो ।। भगवत जनम सुधार ।।
तुम हम बीचे हो रहया ।। सो सब जोधा मार ।।११३।।

मेरा भ्रम और कर्म तथा भय ये सभी तोड्कर हे भगवंता,मेरा जनम सुधार । आपके और हमारे बीच में,आपकी और हमारी भेंट होने मे बाधा करनेवाले ऐसे जो योध्दे है ऐसे योध्दावों को मारकर हटा दो ।।११३।।

कसर कोर काची सबे ।। भांजो दीन दयाल ।।
जन अपणो हरि जान के ।। कृपा करे प्रतिपाल ।।११४।।

मेरे अंदर जो कुछ कोर–कसर और जो कुछ कच्चापन होगा वह दीनदयाल तोड दो । हे हरी,आप मुझे अपना समझकर कृपा करके मेरा प्रतिपाल करो ।।११४।।

आळस अंग मिटाव ज्यो ।। परमातम परदेव ।।
अेसा साम नवाज हो ।। करूं अटल सत्त सेव ।।११५।।

मेरा आलसी स्वभाव मिटा दो । परमात्मा देव,आप मेरे स्वामी हो,जनको नवाजनेवाले हो । मै आपकी अटल याने सदा फलित रहनेवाली ऐसी सत सेवा करुँगा ।।११५।।

निंद्रा नासत झूठ भै ।। जोबन जंवरो मार ।।
साहिब अे झूठा घणा ।। सब जुग चाल्यो हार ।।११६।।

निद्रा यह झूठी है । इसमे काल का भय है तथा जवानी यह यम की मार है । साहेबजी ये सभी झूठे है । इनके आगे सारा जगत हार गया है ।।११६।।

जन पर किरपा कीजिये ।। अे सब राखो दूर ।।
आठ पहर अखूट ले ।। राखो स्याम हजूर ।।११७।।

मेरे उपर कृपा करो और ये सभी मुझसे दूर रखो और हे मालिक,हमेशा अष्टोप्रहर अखूंट मुझे अपनी हजूरी मे रखो ।।११७।।

प्रेम पठावो प्रीत दो ।। प्रगल करो सरीर ।।
ब्रह उपावो रामजी ।। ग्यान गळावो तीर ।।११८।।

आपके लिये प्रेम प्रगटे ऐसा स्वभाव बना दो। आपसे प्रिती आवे ऐसी मेरी प्रकृती कर दो। आपके लिये मेरा शरीर पिघला दो। मेरे हंस मे आपके लिये विरह उत्पन्न करा दो । और मै आपके कैवल्य विज्ञान ज्ञान मे रहूँ ऐसे मेरे हृदय मे ज्ञान के तीर गाड दो ।।११८।।

तुम प्रसण प्रचित मिलो ।। अेसी कर सत्त स्याम ।।
जन कूं दोष न दीजियो ।। तुम सारो सब काम ।।११९।।

आप प्रसन्न होकर आपका समजकर मिलो। हे सतश्याम,आप मुझे दोष मत दो । आपही मेरा सभी काम सार दो ।(पूर्ण करो) ।।११९।।

ओ जुग आतम पूतली ।। तम बाजीगर राम ।।
ईचरज खेल पसारियो ।। कळ किमत सब धाम ।।१२०।।

यह संसार और संसारकी सभी आत्मा कठपुतली जैसी है और आप रामजी कठपुतलीका खेल करनेवाले बाजीगर हो। आपने ही यह आश्चर्यका खेल फैलाया है। सभी कल,हिकमत और सभी माया का आपने ही पसारा किया है ।।१२०।।

जैसे आप नचाव हो ।। तैसे राचे जीव ।।
बाजीगर बस पूतळा ।। मै तुम बस युँ पीव ।।१२१।।

(जैसे बाजीगर कठपुतली को नचाता है वैसे वह नाचती है ।)वैसेही आप इस जीव को जैसे नचाते हो वैसेही ये जीव नाचते है। जैसे कठपुतली खेल दिखानेवालेके वशमे है वैसे ही मै भी मेरे मालिक आपके वश मे हूँ ।।१२१।।

ज्युँ गुडिया उड असमान मे ।। पावन के बस होय ।।
यूँ कर्मा बस आतमा ।। दुख पावत हे लोय ।।१२२।।

जैसे पतंग आकाश मे उड्कर हवा को वश हो जाती है। इसीतरह से यह आत्मा कर्मो के वश होकर दुख भोगती है।(जैसे पतंग उपर आकाश मे उड्कर अधिक हवा के कारण चक्कर खाकर पेड्पर या जमीनपर निचे गिर जाती है और फट जाती है और पतंगको योग्य(अनुरुप,उचित)हवा रही तो स्थिर रहकर उपर उड्ती है ऐसेही कर्मोके वश यह आत्मा दुख भोगती है । ऐसे ही कर्मो के वश सभी लोग दु:ख भोगते है ।।१२२।।

मोह डोरि आतम गुडि ।। पवन कर्म करूंर ।।
सब बस हे तुझ साईयाँ ।। ज्युँ डोरी गेह सूर ।।१२३।।

पतंगको जैसा डोरी लगी रहती है वैसे आत्माको मोह की डोरी लगी है। हवाके कारण पतंग जैसे आकाशमें उड्ती है वैसे जीवके कठोर कर्म जीवको संसारमें नचाता है। जैसे पतंगकी डोरी पतंग उड्नेवालेके हाथमें लगी रहती वैसेही सभी आत्मावोकी डोरी आपके ही वश है। ।।१२३।।

छंद ।। भुजंगी ।।

धिनो राम राया ।। बड्डा देव दूजा ।। करे सेव सारा ।। सबी संत पूजा ।।
सबे सरण आया ।। किया भेद भारी ।। लखे जन पूरा ।।काया सोज सारी ।१२४।

आप रामजी धन्य है। दुसरे सभी बडे-बडे देव आपकी सेवा करते है और सभी संत आपकी पूजा करते है। सभी आपके शरणमें आये है ऐसा आपने बहुत भारी भेद किया है। आपको जो पूरे संत है वेही पहचानते। जिन संतोने अपनी सभी काया खोजी वेही आपको पहचानते है ।।१२४।।

दाणुं देव देवा ।। करे जुध भारी ।। तिहुँ लोक धूजे ।। निमो गत थारी ।।१२५।।

राक्षस और देव तथा देवा याने शक्ती ये सभी आपस मे बहुत भारी युध्द करते है। आपसे तीनो लोक तथा देवी-देवता तथा राक्षस ये सभी धुजते है। आपके इस किसी को न समजमे आनेवाले गती को नमस्कार है ।।१२५।।

छंद ।। मोतीदान ।।

बडा रिष सारा ।। धरे ध्यान ग्यानी ।। करे संत सेवा ।। बिधो बिध जाणी ।।
अेको हरि आप अजीत अनाथ ।। किया जुग जीव भरे बोहो बाथ ।।१२६।।

दुसरे बडे-बडे सभी ऋषी और सभी ज्ञानी आपका ध्यान करते है और संत भी आपकी विधी-विधी से(कोई किसी विधी से तो कोई किसी विधीसे)आपको जानकर आपकी सेवा करते है । आप स्वयं हरी एक ही हो । आप अजीत याने किसीसे भी जीते नही

जाते,अनाथ याने आपके उपर कोई मालिक नही और आपने संसारमे जीव बनाये । वे सभी आपसमे एक-दुसरे से बहुत तरह से झगड्ते है ।।१२६।।

अडे सब खाण तुमारे काज ।। काहा तुम खेल कियो महाराज ।।१२७।।

सभी चारो खान आपके लिये अड्ते है तो महाराज,ये आपने कैसा खेल बनाये हो? ।।१२७।।

करे सो कूण करावे हे काम ।। धरे कुण ध्यान तुमारा हो राम ।।१२८।।

यह काम करता कौन?और कराता कौन है ?और रामजी आपका ध्यान कौन धरता(करता) है ? ।।१२८।।

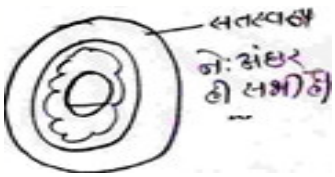

तुंहि तुं देव बण्यो तुं दुग ।। तुंहि तुं मास बण्यो तुं जुग ।।१२९।।

आप ही देव और आप ही द्रगपाल बने है और आप ही आप महीना बने है । आपही आप युग हुवे ।।१२९।।

तुहि धर लंब बण्यो आकास ।। तुं हि जल नीर उपावण आस
किया थे ठाम अनेकाँ अनंत ।। रहे तुं ठोड़ लखे को संत ।।१३१।।

आप ही धरती(जमीन)और आप ही आकाश बने और आप ही पानी और आपही पानी की आशा करनेवाले और आपने ही रहने के स्थान अनेक अनंत बनाये और आप किस स्थानपर रहते वह कोई एखाद संत ही जानता है ।।१३१।।

बण्यो तुं भाव भलाई राम ।। करी ते देह बणाया दाम ।।१३३।।

और आप ही रामजी भाव बने और आपने ही यह देह बनाया और देह में आपने ही धाम बनाये ।।१३३।।

उपाया जीव अनंत अपार ।। दिया सुख दुख जिवा जुग लार ।।१३४।।

आपने जीव अनंत और अपार बनाये और इस जीव को,जीव के पिछे संसार मे सुख और दुख लगा दिये ।।१३४।।

किया ते धंध बणाया धाम ।। हुवो तुं जम काहा तुं राम ।।१३५।।

आपने ही ये सभी धंधे बनाये और ये सभी धाम बनाये और आप ही यम हुये और और कही भी आप राम बने ।।१३५।।

किया तें के मइसी बिध सूत ।। जणे किम नार अघाटे हे पूत ।।१३६।।

आपने कैसे? किस तरह से सूत से(विचार के)बनाया कि ये स्त्रीयाँ प्रसव करती है और कैसे बिकट घाट से बच्चा पैदा करती है? ।।१३६।।

नव विध मास रखे ग्रभ बाल ।। किसी बिध राम किवी प्रतिपाल ।।१३७।।

गर्भ मे नौ महीने बालक को किस विधी से रखता । तो गर्भ मे रामजी आपने किस तरह से प्रतिपाल किया ।।१३७।।

केहुँ मै तोय केतियेक बार ।। किसी बिध राख्या जीव आहार ।।१३८।।

आपको मै कितनी बार कहूँ?यह आपने किस तरह से जीव को गर्भ मे आहार दिया?।।१३८।।

अनो अनपान भखे नर नार ।। किसी बिध नार कियो संभार ।।१३९।।

अन्न और पानी स्त्री-पुरुष खाते है ।(अन्न और पानी खाये हुये,अन्न और पानी पेट मे से गुदाघाटके रास्ते बाहर हो जाता है परंतु गर्भका बालक नही गिरता है। तो गर्भ के बच्चे को नही गिरते हुये कैसे रखा?और उस बच्चे को आहार कैसे पहुँचाया?और किया गया आहार गिर गया और गर्भ न गिरकर रह गया)तो गर्भ को स्त्री ने किस तरह से संभाला? ।।१३९।।

रखे ग्रभ जीव किसी बिध राम ।। जलो अन अहार भखे उण धाम ।।१४०।।

गर्भ के जीव को राम ने किस तरह से रखा? जिस जगह पानी और अन्न भक्षण करता है। ।।१४०।।

बहे जल घाट झरे मल सोय ।। किसी बिध जीव रहे नित्त जोय ।।१४१।।

और वहाँ से(जिस जगह पर गर्भ रहता है वहाँ से)पानी मुत्र बहते रहता है और वहाँ से मल झरते रहता है उस जगह पर यह जीव किस तरह से नित्य रहता है ।।१४१।।

किया तें केम किसी बिध राम ।। जळो रज बूंद धरी मेह ठाम ।।१४२।।

आपने रामजी किस तरहसे इस जीवको कैसे बनाया?जल,रज और बिंदू उसके अंदर उस जगह कैसे रोककर रखा ? ।।१४२।।

घड़या तें केम किसी बिध जीव ।। कहुँ मै तोय बतावो पीव ।।१४३।।

उस जगह रज और बिंदूसे इस जीवको किस तरहसे गढकर बनाया? मैं आपको कहता हूँ ,हे मेरे मालक,मुझे बतावो ? ।।१४३।।

नहि घण राछ संडासी नॉय ।। किसी बिध जीव घडया हर माय ।।१४४।।

उस जगह घन याने बडा हथौडा या दुसरे औजार या पकडने के लिये सांडसी वहाँ अंदर कुछ भी नही ऐसी जगह पर जीव को किस तरह से गढकर बनाया ? ।।१४४।।

घडे किम सीस बणावे नाक ।। किसी बिध नेण किया तें पाक ।।१४५।।

अंदर मस्तक किस तरह से गढकर तैयार किया?नाक किस तरह से बनाया?और किस तरह से ये आँखे,पैर बनाये ? ।।१४५।।

बणाया हाथ घड़े किण घाट ।। बणाया होट किवी मुख बाट ।।१४६।।

ये हाथ बनाये वे किस घाट में गढकर हाथ बनाये? और आपने ओठ बनाये,मुख बनाकर मुख मे रास्ता बनाया ।।१४६।।

कहुँ मै राम सुणो करतार ।। किसी बिध जीभ बणाई सार ।।१४७।।

मै रामजी आपसे कहता हूँ,करतार आप सुनो,जीभ किस तरहसे सवाँरकर तजवीजसे बनायी ? ।।१४७।।

किया किम केस किसी बिध स्याम ।। बणाया खून निमो सत राम ।।१४८।।

आपने ये केश याने बाल बनाये और बालों का रंग काल किस तरह से बनाया? केश बहुत अच्छे बनाये(आपने केश काले बनाये और रक्त लाल बनाया)तो सत्तराम आपको नमस्कार है ।।१४८।।

चडाया रंग किया सब स्याम ।। ध्रग जिण जाग खुले तिण वाम ।।१४९।।

और सारे शरीरपर रंग चढाकर आपने स्वामी सभी बनाये । जिस जगह पर रखा था उसी जगह खुले ।।१४९।।

नहिं को चोट न देवे घाव ।। किया हरि केम बडा मुझ चाव ।।१५०।।

यह शरीर गढनेमें कही भी किसी भी औजारकी चोट नही दी और कही भी औजारसे घाव नही किया। यह आपने औजारके बिना कैसे शरीर गढके बनाया इसका मुझे आश्चर्य होता है? ।।१५०।।

बणाया सीस धऱ्या सिर कान ।। किसी बिध पाख बणाया जान ।।१५१।।

आपने सिर बनाया और उस सिर के उपर कान बनाकर रखा । ये सभी आपने ये कान दोनो तरफ अलग-अलग किस तरह से बनाये ? ।।१५१।।

नमो तुज स्याम सनेपी नाय ।। इसी बिध बात कियो मोहि जाय ।।१५२।।

आपको स्वामी नमस्कार है। सनेपी( ) इस तरह से ये बाते मुझे करके दिये ।।१५२।।

बणाया अेक तमे असतुल ।। लगाया खंभ उभे सत्त मूल ।।१५३।।

आपने तो यह मेरा एक स्थूल शरीर बनाया । शरीर की दो खंभे लगाये ।।१५३।।

बणाया पाँव किसि बिध जोड़ ।। लखावे अेक चोवीसुं ठोड ।।१५४।।

ये पैर बनाकर किस तरह से जोडे?ये सब जोड चोबिस जगहों पर समझ में आता है। ।१५४।

किया ते केम कोहो करतार ।। बणाया देवल देव मुरार ।।१५५।।

करतार यह आपने कैसे बनाये? वह मुझे बतावो?आपने यह देवल याने मंदिर बनाकर इस मंदिर मे रहनेवाला देव कैसे बनाया ? ।।१५५।।

धऱ्यां ते देव किसी बिध मांह ।। फिरे सो धाम दवादस जाह ।।१५६।।

आपने इसके अंदर देव लाकर किस तरहसे रखा? और श्वास बारह जगह जाकर घूमता है । ।१५६।।

बणाया महल अनोप अजब ।। रमे तुं मांहि निसो दिन रब ।।१५७।।

यह ऐसा अनूप ऐसी जिसकी उपमा नही दी जा सकती है ऐसा अजब महल आपने बनाया । इस महल मे आप रात-दिन हे रब(रामजी)रमन कर रहे हो ।।१५७।।

केता सो देव तुमारे पास ।। जोवे कोहो कुण गहे को बास ।।१५८।।

और भी इस शरीर मे आपके पास कितने देव है । इसमे देखनेवाला कौंन? और सुगंधी

कौन लेता है ? ।।१५८।।

सुणे सो स्याम झरोखा मांहि ।। कहो ओ कूण अनो जळ खाय ।।१५९।।

इन खिडकियो मे से सुननेवाला कौन?और यह अन्न,जल खानेवाला कौन है? यह मुझे बतावो ? ।।१५९।।

झरोखा दोय सुणे को बात ।। दुजी हरि धाम न जाणी जात ।।१६०।।

दो झरोखो से बाते सुनता है । यही दुसरी जगह से बात सुनी नही जाती है ।।१६०।।

बणाया देवळ देव मुरार ।। झरोखा मांय अबे मिल चार ।।१६१।।

आपने देवल याने मंदिर बनाकर उसमे मुरारी देव बनाया । इन खिडकियोमे अब मिलकर चार सुननेवाला,देखनेवाला,सुगंध लेनेवाला और रस चखनेवाला बनाया ।।१६१।।

कहो कुण देव झरोखा मांहि ।। किसी बिध रूप गहे हरि जाय ।।१६२।।

बतावो किस झरोखेमे कौनसा देव है? तो किस तरह से यह रुप पक्ड लेता है ।(एक बार देखा हुवा मनुष्य पुन: मिला तो उसे पहचान लेता है । देखा हुवा स्थान या अक्षर या वस्तु पुन: पहचान लेता है तो इसका रुप कैसे पकड लेता है कि उसे नही भूलता है ।) ।।१६२।।

लेवे कुण वास सुवास सरीर ।। कोहो कुण धाम बनाई ह ईस ।।१६३।।

और यह सुवास याने सुगंधी लेनेवाला शरीर मे कौनसा देव है बतावो ?कौनसा धाम ईश्वर के लिये बनाया ? ।।१६३।।

तमे तो अेक बणाया जीव ।। नखे चख मांहि रमे किम पीव ।।१६४।।

आपने तो इस शरीर मे सिर्फ एक ही जीव बनाया फिर यह नाखून से आँखो मे सभी शरीर मे किस तरह से रमता है वह मुझे बतावो ? ।।१६४।।

गहे सत्त बात सबे संग जाय ।। किया षट धाम झरोखा मांय ।।१६५।।

और सत बात धारन करता और सभी के साथ जाता है । इस तरह से छ:जगह झरोखे बनाये। ।।१६५।।

सुणे जिण धाम न देखे रूप ।। गहे जाहाँ बास नहि षट चूप ।।१६६।।

जिस जगहसे सुनता है याने कानसे सुनता है उस जगहसे(कानसे)रुप देखते नही आता है और जिस जगह याने नाक से वास लेता है इस जगहसे छ:तरहके रस(नमकीन,खट्टा, तीखा, फिका,मीठा,अनूप)नाक से परखा नही जाता है ।।१६६।।

किया ते धाम नियारा सोय ।। याहाँ की बात उवाँ नहि होय ।।१६७।।

तो ये स्थान आपने सभी देखने का,सुनने का,सुगंध लेने का और रस चखने का अलग-अलग बनाये । यहाँ की बात वहाँ नही होती है ।(कान से सुनता है वही सुनने का काम आँखो से नही होता । नाक से सुगंध लेता है वही सुगंध लेने का काम मुख और जीभ नही कर सकती है । इस तरह यहाँ की बात वहाँ नही होती है ।)।।१६७।।

हे घट अेक कदू जो माय ।। अेकण धाम सबे नहि खाय ।।१६८।।

यह घट मे एक ही है कि अंदर दुसरा और कोई है?अंदर एक ही है तो वह सभी का(सुनना, देखना,सुगंध लेना,रस चखना)यह सभी एक ही जगहसे क्यों नही करते आता है?(यदी शरीर मे एक ही है तो सुनने का काम कान से,देखने का काम आँखो से,सुगंधी लेने का काम नाक से रस चखने का काम जिव्हा से और स्पर्श का काम चमडी से ऐसे अलग-अलग क्यों लेना पडता है ?और शरीर के किसी भी स्थान से क्या नही लिया जाता है ?) ।।१६८।।

न्यारा देव क अेकी होय ।। कहुँ मै पीव बतावो मोय ।।१६९।।

ये सभी इंद्रियो के देव अलग-अलग है या एक ही है । यह मै पुछ्ता हूँ आप मेरे मालिक मुझे बतावो ।।१६९।।

किया ते केम किसी बिध राम ।। गहेसो वास बिधो बिध स्याम ।।१७०।।

हे रामजी,आपने ये किस तरहसे कैसे बनाया है कि नाक है जो वह विधी विधी की सुगंध याने अनेक तरह की सुगंधी लेकर परीक्षा करके बता देती है ।।१७०।।

किया सो घाट अनेक अपार ।। काहाँ तुं स्याम बिराजण हार ।। १७१ ।।

आपने इस शरीर मे अनेक अपार घाट बनाये हो तो आप स्वामी इस शरीर मे किस जगह पर रहते हो ? ।।१७१।।

किया तें सूत अनेख अजात ।। घड़ि घट मांहि केती ते बात ।।१७२।।

आपने अनेक तरह के सूत बनाये ( ) इस घट मे कितनी बाते घड्वायी है।।१७२।।

बणाया देवळ देव असंख ।। किया ते सहर भड़ा भड़ पेख ।।१७३।।

आपने असंख्य देऊल बनाये और उस देऊल मे याने शरीर मे असंख्य देव(जीव)बनाये और आपने बडे-बडे शहर बनाये । उसमे जबरदस्त योध्दे देखे ।।१७३।।

बणाया सेंग अनोप अपार ।। बसे मंझ गाडर गायर नार ।। १७४ ।।

आपने सब कुछ अनूप,अपार(पार नही)इतना बनाया । उसमे भेड,गाय,सिंह ये रहते है ।।१७४।।

सबे सो सहर बना बिच होय ।। तुमे बिन सहर न देख्यो कोय ।।१७५।।

यह सभी शहर(शरीर)वनके बीच है परंतु आपके बिना कोई भी शहर(शरीर)देखा नही ।।१७५।।

बडा सो साह रिखि बन माय ।। बसे सो सहर सूनि दिस नाय ।।१७६।।

बडे-बडे सावकार शहरमें(शरीर मे)रहते है । और ऋषी वनमे रहते है । ऐसा शहर(शरीर)बस रहा है । इस शरीर में खाली दिशा कोई भी नही ।।१७६।।

लगी मंझ हाट चोरासी बीस ।। अबे फिर तीन बणाई ईस ।।१७७।।

इस शहर मे याने शरीर मे एक सौ चार दुकाने लगी है । अब और भी तीन ईश्वर ने

बनाई । ।।१७७।।

किया तें सहर सज्या बोहो भाय ।। धरी तें चीज अनेकु माय ।।१७८।।

ऐसा वह शहर बनाकर शहर को बढीयाँ सजाया । इस शहर मे(शरीर मे)अनेक चिजें आपने रखी ।।१७८।।

बसाया सहर अनोप अग्याद ।। किया मंझ चोर बसाया साद ।।१७९।।

ऐसा आपने शहर(शरीर)अनोप(जिसकी उपमा नही जा सकती)ऐसा अगाध(अथांग)शहर (शरीर)बसाया । इसमे चोर भी और साधू भी बसाये ।।१७९।।

बणाया कोट किला करतार ।। किवी बोहो बाड़ बना की सार ।। १८० ।।

इसमे कोट और किल्ले हे कर्तार आपने बनाये और बहुतसे बाडे बनाये और वन की तजवीज किया ।।१८०।।

बणाई तीन बड़ी मंझ पोंल ।। पडे नित सहर अचूकी रोल ।।१८१।।

और इसमे तीन बडे दरवाजे बनाये। इस शहर मे नित्य उत्पात अचूक पड्ते रहता है।१८१।

चडे इकनार बडी भै भीत ।। लिया तिण दाणुं सबे नर जीत ।।१८२।।

उसमे एक स्त्री चढाई करती है । वह बडी भयभीत है । उस स्त्रीने सभी मनुष्य और सभी दानव(राक्षस)इन सभी को जित लिया ।।१८२।।

घडियेक चार पकी मिल दोय ।। अेते मेहेर हलावे जोय ।।१८३।।

वह चार घडी याने पक्के दो घंटे इतने समय में शहर(शरीर)शोधकर हकाल देती है।१८३।

हुवे सब लीन अधिन अनाथ ।। बडा मझ भूप तिके पण साथ ।।१८४।।

उससे सभी लीन होकर उसके आधीन होकर सभी अनाथ याने गरीब हो जाते है । इसमे बडा राजा(मन)यह भी उसके साथ हो जाता है ।।१८४।।

इसी दोय नार बणाई स्याम ।। नितो नित सहर बिंदुसे राम ।।१८५।।

इस प्रकार से स्वामी ने दो स्त्रियाँ बनाई । नित्य-नित्य इस शहर का याने शरीर का विध्वंस करती है ।।१८५।।

नहिं बस तीन जोरावर नार ।। किया सब खाँच पचीसुं हुँ लार ।।१८६।।

ये स्त्रीयाँ बहुत जबरदस्त है । ये तीनोके भी वश नही होती है । उन्होंने पाँच( )और पच्चीस प्रकृती को खिंचकर अपने साथ कर लिया ।।१८६।।

बचे नहि अेक बिना तुझ स्याम ।। करे अे नार अनिता हां काम ।।१८७।।

इसमे से स्वामी आपके बिना एक भी नही बचते है । ये स्त्रीयाँ अनीती के काम करती है ।।१८७।।

सुणो जगदीस संभाळो मोय ।। लुटिजे सहर तुमारो हो जोय ।।१८८।।

हे जगदीश सुनो और मुझे संभालो । यह आपका शहर(शरीर)लूटा जा रहा है वह देखो ।१८८।

धणी तुम आण बंधावो धीर ।। उलटया दाणुं बावन बीर ।।१८९।।

मालिक,आप आकर मुझे धैर्य बँधावो । सभी दानव(राक्षस)और बावन बीर उलटकर आये है ।।१८९।।

करो हरि साय अजुणि हो नाथ ।। अबे बिष प्राण पडे हे हाथ ।।१९०।।

(परमात्मा को विनती)

अब हरी आपही मेरी सहायता करो । आप अयोनी(योनी मे नही आनेवाले)नाथ हो । अब यह मेरा प्राण विषयों के हाथो मे पड रहा है ।।१९०।।

लुटिजे हे सहर बडो अचगत ।। अनन्ता मांय बणायो सत्त ।।१९१।।

यह शरीर लूटा जा रहा है । बडे अचंगत इस अनंत में सत्त बनाये हो ।।१९१।।

किया तें ठाठ मंडाण अपार ।। समझे सेंग सने संग नार ।।१९२।।

आपने अनेक थाट और अपार(तरह-तरह की)मंडणा याने रचना बनायी है । यह सब समझती,ये साथकी स्त्रियाँ सने होती(प्रिती मे)समझकर सभी स्त्री-पुरुष संग करते है ।।१९२।।

किया अेक साह बड़ा करसाण ।। ढली एक बालद नगर मंझ आण ।।१९३।।

एक बडा सावकार और एक बडा किसान बनाया । एक बालद(माल की बोरीयाँ लदे हुये बैल) आकर नगरीमें पडाव किया । (जो खाये-पिये वह सभी पेट नगर मे(नाभी में)आकर पडा । ।।१९३।।

बिणजे सेठ करे बोपार ।। चले जुग नायक सोदो हार ।।१९४।।

वहाँ नाभी से सेठ वाणिज्य करता है । वहाँ से नायक सौदा हार कर देता है ।।१९४।।

संभाळे गुण गिणे सो दाम ।। अबे सो नायक चेतन राम ।। १९५ ।।

बोरी संभालना और दाम गिनता है। अब वह नायक कौन है?कहोगे तो चैतन्य राम।१९५।

सरे अब बात न काँई स्याम ।। दिरावो माल माया सो राम ।।१९६।।

अब स्वामी कुछ भी बात सरकती नही है। रामजी वह माल-माया सभी दिखावो ।।१९६।।

पुकारे तुज सुणो हरि राय ।। गमाया माल दिरावो आय ।।१९७।।

मेरा जीव हे हरी तुझे पुकार रहा है । हे हरी मैने माल गमाया हूँ वह दिरावो ।।१९७।।

बणाया ठग बडावे ताल ।। बंधी तें मोर घरोघर माल ।।१९८।।

आपने बडे ठग बनाये और बेताल बनाये। आपने मोर बांधा और घर-घर तोरण बांधा ।१९८।

बिणजे साह घरोघर राम ।। मुदे सो अेक बणायो धाम ।।१९९।।

अब सावकार घर-घर वाणिज्य करता है। सभी नाडी-नाडीको रस देता है । मुद्देका एक धाम(ठिकाण)नाभीमे बनाया।(वहाँसे सभी रस सभी शरीरमे नाडीयोकेद्वारा पहुँचाता है।)।१९९।

बिचे सो हाट अदार अनेक ।। बिणजे साह सुं जाणु सेख ।।२००।।

उसमे बाजार और अनेक आधार बनाये । वहाँ सावकार वाणिज्य करता है और बचा हुवा माल जानता है ।।२००।।

बिसावे चीज मोलावे जोय ।। घरोघर राम पुंचावे लोय ।।२०१।।

वह चीजें खरीदता है और देख-देखकर किंमत ठहराता है और फिर वे चीजे घर-घर लोग (नाडीयाँ)पहुँचाती है ।।२०१।।

निमो तुं राम धिनो करतार ।। बणाया जुग भलो संसार ।।२०२।।

आपको परमात्मा राम नमस्कार है । कर्तार आप धन्य है । आपने यह जग और संसार बहुत अच्छा बनाया ।।२०२।।

रमे सो मांय किया बोहो रंग ।। धऱ्यो सत्त पेम बणायो भंग ।।२०३।।

उसमे आप खेलते और बहुत तरह से रंग करते है और उसमे प्रेम रखा और भंग बनाया ।।२०३।।

ध्रगो नर नार नियारा नाँव ।। कहो कोई सेर बण्यो कोई गाँव ।।२०४।।

स्त्री और पुरुष ऐसे अलग-अलग नाम रखे । कहो कोई शहर तो कोई गाँव बनाये ।२०४।

पिछाण्या तोहि अबे जगदीस ।। तुंई नर नार पसुं तुई ईस ।।२०५।।

अब जगदिश आपको मैने पहचाना । आप ही तो स्त्री है,आप ही तो पुरुष है । आप ही आप पशु है और आप ही सभी का ईश्वर है ।।२०५।।

किया सुख धाम बणाया राज ।। धऱ्यो तुं रूप सुखा के काज ।।२०६।।

और आपने ही अनेक सुखो के अनेक धाम(ठिकाण)बनाये और राज्य बनाये । आपने ब्रम्ह होते हुये पाँचो इंद्रियों का सुख लेने के लिये यह रुप धारण किया ।।२०६।।

किया सो पेम बण्या रस कूप ।। तुमे तुम काज बणाई चूप ।।२०७।।

और यहाँ आकर प्रेम बनाये और रस का कूप बना । आपने आपके ही लिये चतुराई से बनाया ।।२०७।।

किया सो काम सरीद सुनाथ ।। माया मंझ राम लथो बस साथ ।।२०८।।

आपने सभी काम बनाये ।(पाँच इंद्रियाँ और पाँच कर्मेद्रियाँ इनसे सभी काम होता है ।)आप माया मे माया के साथ लथोपथ याने ओतप्रोत हो गये ।।२०८।।

धऱ्या देह रूप बणाया घाट ।। किवी सुख सीर पिणे की बाट ।। २०९ ।।

आपने इस देह का स्वरुप धारन करके घाट बनाये और सुख की सीर(खीर)पीने का रास्ता याने इंद्रियाँ बनायी ।।२०९।।

पियो सो आप नहि कोई ओर ।। तुमे सब जाण बणाई ठोड ।।२१०।।

यह सुख की खीर पिनेवाला और कोई दुसरा नही है । आपने ही सब जानकर सभी जगहे (इंद्रियों के रस लेने के लिये)बनाई ।।२१०।।

ध्रगा गुण तांहि तुमे जगन्नाथ ।। सबे सुख दुख तुमारे हाथ ।।२११।।

उस इंद्रियों के अलग-अलग गुण आपने जगन्नाथ संसार के मालिक रखे । और सभी सुख और दु:ख आपके ही हाथो में है ।।२११।।

किया सब ठाम बिचार बिचार ।। चाहिजे तोहि जकी बिध लार ।।२१२।।

आपने सभी बासन,ठाम(स्थान)बिचार-बिचार करके बनाये। आपको जो चाहिये,जो विधी आपके साथ चाहिये उसी प्रमाण से आपने करा लिया ।।२१२।।

बिना तें काम किया नहिं कोय ।। बणाया घट अनेका लोय ।।२१३।।

आपके अलावा काम कोई(दुसरेने)कुछ भी किया नही । आपने अनेक घट बनाये और अनेक लोग बनाये ।।२१३।।

नमो करतार नमो जगदीस ।। सुधारण काम बिसवा बीस ।।२१४।।

कर्ता पुरुष आपको नमस्कार है । जगत के ईश आपको नमस्कार है । आप सभी के बीस-बीसवे याने एक सौ एक प्रतिशत काम सुधारनेवाले हो ।।२१४।।

नमो निरलंब निराला निचंत ।। नमो सत्त स्याम सबे दु:ख जीत ।।२१५।।

आप निरालंब,निराला,याने सभी से अलग निश्चित रहनेवाले आपको नमस्कार है । आप सतश्याम सभी दु:खो को जितनेवाले आपको नमस्कार है ।।२१५।।

नमो निराकार आकार बिनंगड ।। नमो तत रूप नहिं तुझ संग ।।२१६।।

निराकार याने बिना आकार के आपको नमस्कार है। आप ततरुपी है। आपके संग मे कोई नही है । आपको ऐसे को नमस्कार है ।।२१६।।

नमो गुण ग्यान न पावे पार ।। बडा संत साध तुमारे लार ।।२१७।।

आपके गुणों का ग्यान और गुणोंका पार आता नही। ऐसे आपको नमस्कार है । बडे-बडें संत और बडे-बडे साधू ये आपके साथ है ऐसे आपको नमस्कार है ।।२१७।।

डरे सो राव बडा रजपूत ।। किये तके माय इसां म सब सूत ।।२१८।।

आपसे राजा भी डरता है और बडे राजपूत ही डरते है। आप अंदर ऐसे सभी सूत(सरके) कर दिये ।।२१८।।

कहे तुं नायन देखे कोय ।। किसी बिध सेंग धुजावे लोय ।।२१९।।

आप किसीको कुछ भी कहते नही । और आपको कोई देखता भी नही । आप कौनसे तरह से सभी लोगो को डराते है ।।२१९।।

डरे सब देव जखि जुग राह ।। नमो सत शाम करी किम राह ।।२२०।।

आपसे सभी देव भी डरते है। राक्षस भी डरते है और सारा संसार भी डर रहा है। सतस्वामी आपको नमस्कार है। आप यह कैसे कर रहे है? ।।२२०।।

अेक सूं अेक बडा भै भीत ।। मारे सब स्याम आवे तुं चीत ।।२२१।।

एक से एक बडे देव तथा बलवान राक्षस आपस मे भारी झगडते है परंतु ये सभी बलवान

देव तथा राक्षस आपसे भयभीत रहते है ।।२२१।।

अचंभो मोहि सुणो करतार ।। डरे सो कूण डरावण हार ।। २२२ ।।

इसका मुझे अचंभा है,आप करतार सुनो। इसमे डरता कौन और डराता कौन है?।।२२२।।

न देख्यो तोहि बिना को राम ।। लगाई बीच भुलाई स्याम ।।२२३।।

हे रामजी,आपके बिना डरनेवाला और डरानेवाला कोई दुसरा दिखाई नही देता है । हे स्वामी, आप हमारे में और आपके बीच बडी भूल लगा दी है ।।२२३।।

आयो सुख लेण धर्‍यो अवतार ।। गयो सुख भूल अनेक बिचार ।।२२४।।

यह जीव परमात्मा ने बनाई हुये माया मे पाँचो इंद्रियो के पाँचो विषयों के सुख लेने के लिये मनुष्य अवतार लेकर आया और यहाँ अनेको विचारो में पड्कर सतस्वरुप का वैराग्य ज्ञान सुख भी भुल गया ।।२२४।।

पिया रस प्रेम रहो लपटाय ।। ताते अवगत सूजे काय ।।२२५।।

यहाँ प्रेम का रस पिकर प्रेमरस में लिपटा जा रहा है । उससे अब अविगत देव इस जीव को दिखाई नही देता है ।।२२५।।

गयो सुख भूल कहो ओ जीव ।। तजे बिष बाद तबे सत्त सीवे ।।२२६।।

पाँच विषयो के सुख मे यह जीव अविगत को भूल गया । जिस समय(क्षण)यह जीव पाँच विषय रस त्यागन करेगा उसी समय(क्षण)यह जीव शिव ही है।२२६।

उठे सबे सेंग अनेक बुहार ।। तबे सत्त आप तुहिं तत्तसार ।।२२७।।

जब सभी अनेक तरह के विषय सुखों का व्यवहार उठ जायेंगे । जब तू ही(जीव ही)सत याने जिसका कभी नाश नही होनेवाला ऐसा स्वयं तत सार(ब्रम्ह)है ।।२२७।।

भुल्या तुं राम बिषे पी जोय ।। किवी कल हाथ मिटे नहिं कोय ।।२२८।।

आप राम याने ब्रम्ह होकर विषयों का सुख लेने में भूल गया है और जो तुमने हाथों से कल (कर्म)किया ये कर्म कुछ खुद से मिटाये नही जाते है ।।२२८।।

इसा सो कुण मिटावे हे आय ।। किया हर आप फेर्‍या नहि जाय ।।२२९।।

ऐसा दुसरा कौन है कि आकर ये कर्म मिटायेगा । ये सभी तरह के लिये हुये किसी से भी मिटाया नही जाता है ।(जैसा जीव ने कर्म किया वैसे ही उसके कर्म हर के पास से लिखे जाते है ।।२२९।।

तमारा तुझ सांभळो सूत ।। तबे हरि आप बणे अवधूत ।।२३०।।

तुम्हारा,तुम्ही सूत सम्हाल लो । तबे हरी आप बने अवधूत याने यह कर्म काटने पे जीव स्वयम् भोगी प्रकृती से निकलकर हरी के समान योगी प्रकृती का बनता है ।।२३०।।

किया सो आप अनेक बिचार ।। नीह जुग ओर उपावण हार ।।२३१।।

इस जीवने ही अनेक कर्म किये वह विचार कर देखो । इस जगतमे कर्मको उत्पन्न करनेवाला दुसरा कोई नही है । (कर्म अपने से ही करने से उत्पन्न होता है । दुसरों के

किये हुये कर्म अपने को नही होता है । जिसका उसीको होता है ।) ।।२३१।।

जाहाँ जुग जीव सुखावित होय ।। ताहाँ लग धाम न पावे कोय ।।२३२।।

जब तक जीव संसारमें विषयोमे सुखमे लपटा रहता तब तक वह ब्रम्ह धामको पहुँचता नही । ।।२३२।।

तबे सुख स्वाद बणाया सोय ।। जबे हरि आप अमूरत होय ।।२३३।।

तब इस जीव ने सुख और स्वाद सभी बनाया । आदि मे यह जीव स्वयम. अमुरत हरी याने जीव ही था याने काल के मुख मे न पडनेवाला था ।।२३३।।

सुखां के लेण धऱ्या आकार ।। बिना सुख दुख तुंहि करतार ।।२३४।।

यह जीव ब्रम्ह या परन्तु इन्द्रीयों का सुख लेने के लिए,इसने आकार धारण किया । सुख– दु:ख के बिना तो करतार,एक तूँ ही है । ।। २३४ ।।

मिटावो आप अनेक ऊपाय ।। तुमारी ओर न मेटे आय ।।२३५।।

तुम अनेक उपाय कर मिटा दो । तुम्हारे अलावा और कोई आकर के नही मिटाता है ।।२३५।।

बडो सो खेल अचंभो हो मोय ।। बिना तुम ओर कोहो कुण होय ।।२३६।।

यह बहुत बडा खेल किया है । इसका मुझे अचंभा होता । यह करनेवाला तुम्हारे सिवा कौन है? यह मुझे बतावो ? ।।२३६।।

तिरे सो कूण तिरावण हार ।। बिना हरि कूण उतारे हे पार ।।२३७।।

तरनेवाला कौन है?और तारनेवाला कौन है?हरीके अलावा पार उतारनेवाला कौन है?।२३७।

बतावे भेव सुणे संसार ।। मेंही जड जीव आप चेतावन हार ।।२३८।।

भेद बतानेवाला कौन और संसार में सुनता कौन? मै तो जड जीव हूँ और आप होशियार करनेवाले हो ।।२३७।।

सुखां मे जीव हुवो प्रवाण ।। निरालो होय चेताऊँ आण ।।२३९।।

इन माया के सुखोमे जीव अलमस्त हो गया । मै इन कालके दु:खोसे निकलकर बिना दु:ख के सतस्वरुप सुखका महा अनुभव ले रहा हूँ । इसप्रकार जब जीवोसे निराला होकर हे जीव,तुझे मै महासुख लेने की विधी समजा रहा हूँ ।।२३९।।

लिया सुख दुख अनेक अपार ।। अबे तुं चेत सिरजण हार ।।२४०।।

इस जीवने मायाके वासनावोके सुख और काल के दु:ख अनेक तरह के भोगे । उसका वार–पार नही । अरे,अब तो तूँ चेत याने होशियार हो जावो,तू सिरजनहार ब्रम्ह है याने तू माया के किचड में नही पडता था तो तू ही सिरजनहार ब्रम्ह है ।।२४०।।

तजो जुग जीव बिषे सब खोय ।। कहुँ मै आप निरालो होय ।।२४१।।

तूँ संसार में सभी पाँचो इंद्रियोके विषय रस लेना छोड दे । तब संसारसे तुम्हारा जीव पन

मिट जायेगा । मै स्वयं,संसार से अलग होकर कह रहा हूँ ।।२४१।।

संभाळो काय नहिं करतूत ।। तजो बिष बा दस जम का पूत ।।२४२।।

तुम तुम्हारी करतूत संभालते क्यों नही? ये सभी विषय वाद जो है यही यम के पुत्र है । (विषय वाद जो है वह यम के द्वारपर पकड्कर ले जानेवाले यमदूत है) ।।२४२।।

ताहाँ निज धाम तमारो होय ।। चलो अब आप बताऊँ तोय ।।२४३।।

जहाँ तुम्हारा निज धाम है ।(ब्रम्ह से आये वही स्थान तुम्हारा निजधाम है ।)अब आप चलो, मै आपको,आप का निज धाम बताता हूँ । ।। २४३ ।।

ताहाँ तम रूप अरूप अलेख ।। जाहाँ सुख दु:ख नहिं कोई पेख ।।२४४।।

वहाँ तुम्हारा रुप कुछ भी नही। वहाँ(ब्रम्हमे)आप अरुपी याने वहाँ तुम्हे आजके समान माया का रुप नही रहता। वहाँ बिना रुपके हो। वहाँ अलेख हो याने लिखनेमे नही आनेवाले(अलिखित)हो। वहाँ संसार समान माया के सुख–दु:ख कुछ भी देखने में नही आता है । ।।२४४।।

चलो अब धाम तजो आकार ।। बिना कुल ब्रम्ह मिल्यो नित्त कार ।।२४५।।

अब आप यह आकर याने पाँच तत्वों की देह छोड्कर आवो,ब्रम्ह धाम याने सतस्वरुप धाम को चलो। वहाँ बिना कुल के सतस्वरुप वैरागी ब्रम्ह में जाकर नित्य मिलकर रहो ।।२४५।।

बाजावो आप अमोल ई मांट ।। होता तुम नाथ अजूणी आँट ।।२४६।।

आप वहाँ जाकर अमोल कहलाओगे । आप आदि अयोनी ही थे मतलब जीव का जनम हुवा नही,वह आदिसे है ही ।।२४६।।

तजो जुग जीव तणो बोहार ।। मिलो घर आद तणो दरबार ।।२४७।।

आप इस संसारसे जीवपन का व्यवहार छोड दो और आदि घर जाकर पहले जहाँ से आये वहाँ उस दरबार में मिल जावो ।।२४७।।

काहा तुम भूल रहया घर धाम ।। दिया दिल झूट बिकारा काम ।।२४८।।

तुम अपना ब्रम्ह घर और ब्रम्ह धाम याने सतस्वरुप ब्रम्ह धाम भूल रहे हो? तुम्हारा निजमन इन झूठे विकारों मे और काम वासना में जुड गया ।।२४८।।

तजो कुळ जात सगाई नेम ।। छाडो सुख दुख तणा सब पेम ।।२४९।।

अब आप कुल(होनकाल ब्रम्ह)और जात(होनकाल ब्रम्ह),सगाई(होनकाल ब्रम्हमें मिलना) इनके सभी नियम छोड दो और सारे माया के सुख–दु:ख छोड्कर माया के सुखो से प्रेम मत रखो ।।२४९।।

बिछोड़ो तत उपाया सोय ।। मिल्यो घर आद तुमारो जोय ।।२५०।।

जिस पारब्रम्ह तत्वसे आप अलग हुये जिस स्थानसे आप उत्पन्न हुये उस स्थान के सभी उपाय छोड दो । आप अपना आदी घर देखकर उस घर में जाकर मिल जावो ।।२५०।।

तजो गुण तीन मिटावो धात ।। करो तम सोध तमारो साथ ।।२५१।।

तीन गुण(रजोगुण,तमोगुण,सतोगुण)इस त्रिगुणी मायाको छोड्कर और शरीरके सात धातूवोंको मिटा दो । जो हमेशा तुम्हारे साथ रहता है उसकी खोज करो ।।२५१।।

पचिसुं मेट हुवो करतार ।। काहाँ तुं जीव पणो रहे धार ।।२५२।।

पच्चिसों प्रकृतियोंको मिटाकर आप ही करतार बन जावो । कहाँ तुम जीवपना धारन कर रहे हो ? ।।२५२।।

लिया सुख स्वाद सबे बिष जोय ।। अबे तुं छाड़ घणा दिन होय ।।२५३।।

तुमने सभी विषयोंके सुख और स्वाद ले–लेकर देख लिये । अब तुम इन विषयोंके सुख छोड दो । इन विषयोंका सुख लेते–लेते बहुत दिन हो गये ।।२५३।।

गया जुग जोय असंखुँ बीच ।। रचो बोहो भाँती माया जुग कीच ।।२५४।।

देखो,तुम्हें उत्पन्न होनेके दिनसे बीचमें असंख्य युग व्यतीत हो गये । इसमे तुम इस माया के किचड में रचमचकर याने खुशी होकर इस माया के किचड में सच्चा सुख भूल रहे हो ।।२५४।।

कियो अेक खेल तमासो सोय ।। अबे बस काहा उसी के होय ।।२५५।।

तुमने ही यह एक पाँच तत्वोंके संगसे(देह धारन करके)एक खेल किया । अब तुमने ही खेल करके तुम ही उस खेल के वश मे हो रहे हो ।।२५५।।

तमे तत्त रूप अरूप अनाथ ।। माया अंग आप बणायो हाथ ।।२५६।।

तुम तो ततरुपी,अरुपी,अनाथ याने तुम्हारे उपर कोई नाथ यानी मालिक नही है ऐसे हो । तुम तुम्हारे ही हाथोसे मायाके अंग(पाँच तत्वों की देह)बनाकर इसके अंदर आये हो ।।२५६।।

अबे बस काय हुयो करतार ।। रहयो संग हाथ बणायर लार ।।२५७।।

अब तुम करतार होकर फिर इस मायाके वशमें क्यों हो रहे हो? तुम तुम्हारे ही हाथोसे माया बनाकर इनके संग मे क्यो हो रहे हो ।।२५७।।

तजो अब मोह उपावण हार ।। बण्या तुम जीव इनुकी लार ।।२५८।।

अब इनका मोह छोडो । माया उत्पन्न करनेवाले त्रिगुणी माया और होनकाल ब्रम्हको छोडो । तुम इनकी संगती से जीव बन रहे हो ।।२५८।।

जोवे संत बाट तुमारी धाम ।। मिलो सुख साज तमारा काम ।।२५९।।

तुम्हारी आद धाम मे सभी संत राह देख रहे है । अब तुम साधन करके उस सुख मे मिल जावो । यह तुम्हारा काम है । ।।२५९।।

हे सत बोट तुमारी स्याम ।। आया सो गेल बिचारो राम ।।२६०।।

वह सत रास्ता तुम्हारा स्वामी के पास जाने का है । जिस रास्ते से तुम आये उस रास्ते का बिचार करो ।।२६०।।

सुणे सो कोण कहे समझाय ।। मेरे उर अेह तमासा माय ।।२६१।।

जीव शिष्य बनके सतगुरु को पुछ्ता कि,यह सुननेवाला कौन है? और समझाकर कहता है वो कौन है ? मेरे हृदय में यह तमाशा है । ।।२६१।।

बिना हरि ओर दूजो नहि कोय ।। इत उत अेक बतावो मोय ।।२६२।।

हरी तुम्हारे अलावा यहाँ वहाँ दुसरा कोई है या यहाँ और वहाँ आप एक ही हो यह आप मुझे बताओ ।।२६२।।

मेहि सतरूप अलेख कहाय ।। भजुं अब कोण मिलुँ काहाँ जाय ।।२६३।।

शिष्य सतगुरु को कहता कि,मैं ही सतरुप और मै ही अलेख कहलाता हूँ । अब मै किसका भजन करु और कहाँ जाकर किसमे मिलूँ ? ।।२६३।।

बिना मुझ ओर बतावो मोय ।। भजु मै ताहि मिलु दिल जोय ।।२६४।।

शिष्य सतगुरु को कहता कि,मेरे अलावा अब दुसरा कौन है?वह मुझे बतावो?मेरे बिना दुसरा कोई बतावो कि,मैं उसका भजन करुँ । उससे दिल लगाकर,उसे देखकर उससे मिलूँ ।२६४।

माया सब रूप हमारो होय ।। बिना ब्रम्ह ओर न देख्यो कोय ।।२६५।।

यह सारी माया जो है वह तो मेरा ही रुप है । माया उत्पन्न करनेवाले मै जीवब्रम्ह के अलावा दुसरा कही भी कुछ भी नही देखा ।।२६५।।

बतावो आण कहो समझाय ।। माया बिन ब्रम्ह कहो कुण थाय ।।२६६।।

यह आकर मुझे बतावो और मुझे समझाकर बतावो की माया के परे का ब्रम्ह कौन और कैसा होता है ? ।।२६६।।

भजु दिन रेण अखण्ड अलोय ।। उभे बिन ओर बतावो मोय ।।२६७।।

मैं रात-दिन अखंड उसका भजन करुँगा । माया से परे और कोई ब्रम्ह है यह मुझे बताओ? ।।२६७।।

माया बिन ब्रम्ह न्यारा न अेह ।। काहा सोई इंद्र काहा हरि देह ।।२६८।।

मायासे ब्रम्ह न्यारा नही है । क्या तो इंद्र,क्या तो हरी(विष्णू)तथा क्या तो सभीके शरीर । सभी शरीर में(जीव)ब्रम्ह है । शरीर यह माया है । इसप्रकार शरीररुपी माया के सिवा ब्रम्ह नही है ।।२६८।।

हुति जब माहि बणाया आण ।। अबे हम इन्द्र बेठाया जाण ।।२६९।।

यह माया उस ब्रम्हमें थी तभी उसने लाकर माया बनाई । ब्रम्हमें माया नही रहती तो कहाँसे माया बनती?अब हमने जो इंद्र बसाया वह इंद्र माया ब्रम्हमें थी इसलिये बनाया ।।२६९।।

बिना हम ओर न देख्यो कोय ।। सबे अंग रूप हमारा होय ।।२७०।।

मेरे अलावा दुसरा मैने कोई भी नही देखा । सभी अंग याने शरीर और सर्व रुप याने

स्वरुप ये सभी मेरे ही है ।।२७०।।

हुता हम मांहि सबे जम काळ ।। तबे हम आण पसाऱ्या जाळ ।।२७१।।

ये सब यम और काल ये सब मेरे अंदर ही थे । ये मेरे अंदर थे तभी मैने यह सब जाल लाकर फैलाया ।।२७१।।

माया हम माय इसी बिध लार ।। उपनी नीरजले पिणियार ।।२७२।।

यह माया बीच मे इस तरह से साथ मे है । जैसे पानी मे बुलबुला उत्पन्न होता है वैसे ही यह माया मेरे अंदर मेरे साथ में है ।।२७२।।

छाडया सबे घाट अभुषण जोय ।। माया बिध संग अेसी बिध होय ।।२७३।।

सभी घाट(गढे हुये अवजार)और आभूषण याने गहने इनका मूल एक धातू ही है । इस तरह से माया की विधी ब्रम्ह के साथ में है ।।२७३।।

घडे तब रूप दिखावे आय ।। भांजे तिण बेर मे हे सब जाय ।।२७४।।

इस धातूको गढकर तैयार किये तब उसका रुप अलग दिखाई देने लगा । इन सभी को पुन: भंगकर तोड्ने पर उनके याने अवजारों के या गहनों के रुप मिट जाते है ।।२७४।।

माया हम अेक सुणो सत्त भेव ।। अबे मुज ओर बतावो देव ।।२७५।।

माया और हम एक ही है यह सत्त भेद सुनो । अब मुझे दुसरा देव बतावो ।।२७५।।

सुणो सत्त बात बताऊँ तोय ।। बिना तुम देव न दूजो कोय ।।२७६।।

सतगुरु जवाब देते है कि,सुनो,सच्ची बात मै तुम्हें बताता हूँ की तुम्हारे अलावा दुसरा देव कोई भी नही है ।।२७६।।

करूं मै न्याव तुमारा जाण ।। सिरे तम देव पडिजे खाण ।।२७७।।

सतगुरु शिष्यको जवाब देते है कि,अब मै तुम्हारा न्याय करता हूँ वह समझो। तुम श्रेष्ठ हो और खाणमें जा पडे हो।(आप ब्रम्हमे से आये हुये ब्रम्ह हो परंतु जिस ब्रम्हमें से आप आये उसी ब्रम्हमें जाकर मिलोगे तो जैसे धातू जिस खानसे आया उसी खानमें जाकर मिलने जैसा होगा। जैसे धातू पहले की तरह और भी पुन: आ जायेगा और वह धातू आगमें तपाया जायेगा। जिस खानमेंसे पहले आया उसीमे जाकर धातूके मिलनेसे उसका आगमें तपना,गलना और हथोडे और धन की मार सहना यह नही छूटेगा । ऐसेही ब्रम्हमें से आये हुये जीव के ब्रम्ह में जाकर मिलनेसे जीवके किये गये कर्म ब्रम्ह में मिलने से नही मिटते है । ब्रम्हमें कर्म भोगे नही जाते है और ब्रम्ह में रहते हुये भी जीव के मन में पाँचो इंद्रियों के सुख लेने की इच्छा हमेशा बनी हुई रहती है। और पाँचो इंद्रियों के सुख पाँच तत्वो के देह के बिना मिलता नही है। इसलिये यह जीव पाँचो इंद्रियो के सुख लेने के लिये धारन करने आता है। तब इस जीवके पहलेके किये गये कर्म जीवके साथमें ही माँके गर्भमें शरीर के साथ ही आ जाते है। वे कर्म आगे प्रारब्ध के रुप मे जीव को भोगने पड्ते है। उन कर्मो को भोगने में अच्छे कर्मो के सुख और बुरे कर्मो के दु:ख जीव को भोगने

पड्ते है ।।२७७।।

धऱ्या तब रूप बंध्या परवाण ।। नितो नित खाण बधे नहिं जाण ।।२७८।।

जब आपने स्वरुप धारन किया तब आपने कर्मोके प्रमाण से परमाणु इकट्ठा करके तुम्हारे सब जीवोके शरीर बांधे गये । नित्य-नित्य खाण मे से निकालकर नही बांधे जाते है ।।२७८।।

लगे बोहो ताव अनेक अपार ।। बिके जुग जीव घरोघर बार ।।२७९।।

उस धातु को अनेक तरह के अपार ताव देते है और खाण मे से धातु निकालनेपर जैसे घर-घर जाती है वैसेही ये जीव ब्रम्ह मे से निकलकर घर-घर जाकर खपते है । मतलब दु:ख भोंगता है ।।।२७९।।

भळे बोहो फेर अनेकु होय ।। दुखी बोहो रूप घडिजे जोय ।।२८०।।

पुन: उस धातु की अनेक बार रुप पलट कर,अलग-अलग वस्तुएं बनकर,उनके अलग-अलग वस्तु बनाये जाते है । और एक वस्तुसे दूसरी बनाते समय,उस धातु को हथोडे से पीटते है । उसी तरह से जीवों की देह का रुप बदलते समय,धातु के जैसा होता है । जब धातु को दूसरा रुप देते है,तब धातु को बहुत दु:ख सहना पड्ता है । वैसे ही जीवो के दूसरे रुप बनाते समय धातु के जैसे जीवो को भी दु:ख होता है ।।२८०।।

पडे बोहो मार अनेकुं ठोड़ ।। तमे युं ब्रम्ह पडे बोहो झोड़ ।।२८१।।

इस जीव पर अनेको जगहों पर बहुत मार पड्ती है । तुम भी ऐसे हो तो ब्रम्ह,परंतु ब्रम्हसे अलग होनेके कारण,यह तुम्हारे उपर मार पड्ती है ।(जैसे धातुके खाणसे अलग होनेके कारण, उसके उपर मार पड्ती है,वैसे ही ।)।।२८१।।

बिछुंटी घात तजी तब खाण ।। माया सो माय भिडयो तब आण ।।२८२।।

जब धातु खाण छोड्कर खाणसे अलग हुवा वैसेही यह जीव ब्रम्ह मे से माया के संग आकर भिड्ा । देह का संग पकड्कर माया के सुख भोगने की इच्छा करने लगा ।।२८२।।

तमे युँ ब्रम्ह कहावो राम ।। धऱ्यो मन रूप तज्यो निज धाम ।।२८३।।

तुम भी ऐसे जीव हो जो ब्रम्ह और राम कहलाते हो परंतु निजधाम(ब्रम्ह)छोड्कर मनके स्वभाव का रुप धारण किया ।।२८३।।

रूप सो खाण कहा नर होय ।। तहाँ सुख जान रहे ओ होय ।।२८४।।

खाण याने ब्रम्हमें यह जीव समझता था की मैं मायाके पाँच तत्वोकी देह धारण करुगा तो मुझे बहोत सुख होगे इसलिये माया का रुप धारण करके आया ।।२८४।।

अबे धर रूप पडयो बस आय ।। जां त्यां रूप संडासी कवाय ।।२८५।।

अब इस माया के पाँच तत्वों का रुप धारण करके इस माया के(पाँच तत्वों के)जाल में पड गया । जहाँ तहाँ यह रुप कर्म रुपी सांडसी में पकडे जा रहा है ।।२८५।।

सहे दुख सीस पि लाजे आण ।। पडे दु:ख घात बिछुटे खाण ।।२८६।।

अब यह जीव यहाँ दु:ख सहन कर रहा है । जैसे कोल्हू में पेरकर तेल या रस निकाला जाता है वैसेही कर्मोके अनुसार पेरे जाता है । जैसे खाण मे से धातू के अलग होने पर उस धातु पर दु:ख पड्ते रहता है वैसा जीवपर दु:ख पड्ता है ।।२८६।।

पलटया नाँव धऱ्या नर नार ।। घडाया कांकण पायल पार ।।२८७।।

उस धातु का नाम पलटकर अलग-अलग नाम रखे जाते है । जैसे धातु के कंगण,पायल आदि गहने बना कर एकही धातु के अलग-अलग नाम रखे जाते है ।।२८७।।

धरी बोहो जात छतीसुं आय ।। अभे अंग दोय ज्यां तां कवाय ।।२८८।।

ऐसे ही बहुत तरह गहनों की जैसी मनुष्यों की अलग-अलग छ्तीसो प्रकारकी याने जातीयाँ बनाई गई । अब यहाँ-वहाँ दो अंग याने मुल धातु और धातु की बनी हुई वस्तु ऐसे दो अंग हो गये ।।२८८।।

अेको मूल आद अनादु होय ।। अबे भर्म नाँव कवावे दोय ।।२८९।।

आदि-अनादि मूल तो एक ही था परंतु भ्रम से दुसरे अलग-अलग नाम हो गये ।।२८९।।

एसे तुं ब्रम्ह बिचारो अेक ।। नारी नर जीव सबे युँ पेक ।।२९०।।

ऐसा तुम भी विचार करके देखो कि तुम और ब्रम्ह तो एक ही थे । ये सब स्त्री-पुरुष जितने जीव है वे सभी आदि मे एक ब्रम्ह ही थे ऐसा देखो ।।२९०।।

धऱ्यो तत्त रूप बणायो तोल ।। हे सत्त अज पडयो अब मोल ।।२९१।।

जैसे खाण मे से धातु बाहर निकलने पर उसका वजन करते है ।)वैसेही इस जीव का भी ब्रम्ह से अलग होने पर तौल(वजन)करते है । यह था तो सत(अविनाशी),अज(आदि का ब्रम्ह) परंतु इसकी ही अब किंमत होने लगी और खपने(बिकने)लगा ।।२९१।।

जळे मल मेल सिहावे काट ।। तबे फिर भाँज घडावे घाट ।।२९२।।

खाण मे निकली हुई धातु जलाई जाती है। ये धातु पे मल-मैल बैठकर,मैली होती है और उसे जंग लगकर,वह जंग उसे खा जाता है। वैसे ही ब्रम्ह से अलग हुए जीवको भी कर्म आदि धातुको लगे हुए जंगकी तरह,खाकर नाश करते है। जब धातुको मैल जंग वगैरे लगता है,तब उसे पुन: गलाकर,गढाकर,उसका दूसरा रुप तैयार करते है। वैसे ही जीवों के भी कर्मो के प्रमाण से देव लक्ष चौरासी योनी भूत,प्रेत,आदि रुप तयार किये जाते है ।।२९२।।

तमे सत्त ब्रम्ह नहिं कोई ओर ।। कहाया जीव बण्या बोहो ठोर ।।२९३।।

अरे,तुम्ही तो सत ब्रम्ह हो । ब्रम्ह के अलावा आप दुसरे कोई नही हो परंतु अब मात्र जीव कहलाये जाते हो और बहुत जगहों पर तरह-तरह के बनाये जाते हो ।।२९३।।

जहाँ थी खाण अमोलक तूट ।। पछे बोहो जाग गयो ध्रब फूट ।।२९४।।

जहाँ धातु की खाण है वहाँ वह खाण अमोलक(अनमोल)है परंतु उस खाण में धातु अलग हुई द्रव्यके बहुत जगहों पर फूटकर अलग अलग उस द्रव्य याने धातु के फूटकर अनेक

टुकडे हो गये । ऐसेही ब्रम्ह से जीव अलग-अलग हुये ।।२९४।।

तोलो सो पाव रत्ती कछु सेर ।। हे ब्रम्ह सब पराक्रम फेर ।।२९५।।

अब धातु की खाणका वजन किसी को भी करने नही आता है परंतु फूटे धातु का क्विंटल, किलोग्रम ऐसे बजन होने लगा। वैसेही ब्रम्हमे से अलग हुये जीवों का भी समझो । धातू का बडा तुकडा कुछ किलो का रहता है। वैसे ही बडे मनुष्य उनका बजन धातू के बडे टुकडे की तरह अधिक होता है। जैसे धातु है खाण का धातु ही परंतु खाण में से अलग होने के कारण छोटे-बडे के वजन का फरक पड गया। वैसे ब्रम्ह से अलग हुये जीवों के भी पराक्रम में फरक पड गया। जैसे चींटी और हाथी है तो दोनो भी जीव ही परंतु पराक्रम मे अंतर है । ।।२९५।।

तुमे सत ब्रम्ह जां दूजो नी कोय ।। जेती अंस जोत उजाळो होय ।।२९६।।

तुम ही सत ब्रम्ह हो सत ब्रम्हमें शिवा दुसरे कोई नही हो। जैसे बल्बका जितना अंश रहता है उतना ही अधिक प्रकाश पडता है। वैसे हर जीवके पराक्रम में फरक रहता है । ।।२९६।।

ससि गुण तेज प्रकाशो आण ।। दियो जुग हीर अनंता जाण ।।२९७।।

जैसे चंद्रमा का गुण । चंद्रमा की कला जितनी अधिक रहेगी उतना ही उसका गुण अधिक प्रकाश पडेगा । पूर्णचंद्र पूरा होने पर चंद्रमणी से जगत को चंद्रमा अनंत हिरे देते रहता है । (वही चंद्रमा उसमे कुछ कमतरता रहने से चंद्रमणी से हिरे नही हो सकते है ।)।।२९७।।

कहिजे तेज प्राक्रम सोय ।। उजाळो फेर सुणो सब लोय ।।२९८।।

तो जैसा-जैसा तेज होगा वैसा-वैसा उसका पराक्रम कहाँ जायेगा । जैसे-जैसे अधिक तेज होगा वैसे-वैसे प्रकाश अधिक होता है । यह सभी लोग सुन लो ।।२९८।।

यूँ सब जीव बण्या हे आय ।। कहुँ मै आदर अंत सुणाय ।।२९९।।

ऐसे ये ब्रम्हसे आकर सभी जीव कम अधिक बने हुये है । आदि और अंततक की बात मै तुम्हें सुनाता हूँ ।।२९९।।

बिना जल जीव प्रकास्यो नाहि ।। याहाँ घट घाट अगर मांय ।।३००।।

पानी के बिना यह जीव प्रगट नही होता है। यहाँ अलग-अलग घट और घाट आग मे ताव देकर तैयार करते है ।।३००।।

सुणो द्रब खाण कहि समझाय ।। तमे ब्रम्ह जीव बण्यो यूँ आय ।।३०१।।

सभी जन सुनो,मैने तुम्हें धातु की खाण समझाकर बताया । वैसे ही तुम भी ब्रम्ह से आकर जीव बन गये ।।३०१।।

मिले घर मांय मिटावे चूंप ।। तबे सब जाय सुखो दुख रूप ।।३०२।।

जब धातु जमीन मे घिस-घिसकर या गलकर मिल जायेगा तब उसका कुछ भी धातुपना नही रहेगा । जब धातु जमीनमे मिल जायेगी तभी उस धातुके सुख और दु:ख सब जायेंगे।

जब धातु का रुप मिट जायेगा तभी धातु के सभी सुख और दु:ख छूट जायेंगे । ।।३०२।।

सहे बोहो ताव धंवे दिन रेण ।। बणावो नाहिं भळे कुण केण ।।३०३।।

जबतक धातु जमीन में नही मिलेगी तबतक धातू को बहुत ताव सहन करने पडेो । और धातु को आगमें डालकर रात क्या और दिन क्या भाथीसे फूँककर तपाया जायेगा तब इस धातुका कुछ मत करो ऐसा कौन कहेगा?(उस धातुका कुछ मत करो ऐसा कहनेवाला कोई नही है ।) ।।३०३।।

इसी बिध आप मिटावो रूप ।। भळे सुख दुख मिटावो चूप ।।३०४।।

आप भी इसी तरह से अपना रुप मिटा डालो । आप पुन:अपना माया के सुख-दु:ख मिटा दो यानी आप माया का संग छोड दो जीस से आपका जीवपना मीट जायेगा ।।३०४।।

अडे सो सेंग सहे सिर मार ।। बिना तुम कोण घडावण हार ।।३०५।।

ये सभी जीव ब्रम्ह होकर भी आपस में अड्ते है लढ्ते है और एक-दूसरे की मार सिरपर सहन करते है। यह तुम सोचो की लढ्ने,अड्नेवाले जीव तुम्हारे सिवा दुसरा कोई घडानेवाला नही है ? ।।३०५।।

सिरे तल अेरण ऊपर मेल ।। संडासी साय हुवे घण पेल ।।३०६।।

लोहे की खाणमेसे आया हुवा लोहेका ऐरण,लोहेका घन और लोहेकी ही सांड्सी ये अपनी ही खाण मे से आये हुये लोहेको उसी लोहेकी सांड्सी,घनसे पीटते है । जैसे लोहेकी खाणसे निकला हुवा ऐरण,घन और सांड्सी उसी लोहेकी खाणसे निकले हुये लोहेको पीटते है वैसेही ये सभी जीव ब्रम्ह में से आये हुये होकर भी एक-दुसरे को मारते है ।।३०६।।

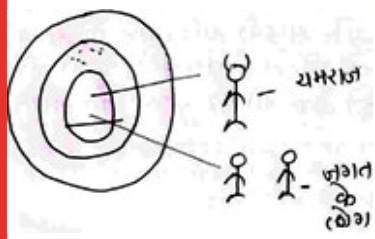

कुटिजे आपस माहि बिचार ।। युँ जुग जीव दुखि संसार।।३०७।।

जैसे लोहे का घन,ऐरण और सांड्सी अपने ही खाण में से आये हुये लोहे को कुटते है वैसे ही होनकाल पारब्रम्ह से निकले हुये जीव कुछ घन समान बनते,कुछ ऐरण समान बनते तथा कुछ सांड्सी समान बनते और वे दुजे जीवो को कुटते याने दु:ख देते इसप्रकार संसार में जीव दु:खी है ।।३०७।।

पडे सो मार अनंता केर ।। खरे कू ताव न देवे फेर ।।३०८।।

ऐसा उस जीवपर अनंत मार पड रही है परंतु लोग असली लोहे को याने फौलाद को कोई पुन: ताव नही देता है ।।३०८।।

बहे अंग अेक सबे बन माय ।। लुळे मुंडे नाहि खिरे तब जाय ।।३०९।।

सभी वनो मे सब पेडो पर सभी औजार एक ही स्वभाव से एक ही अंग से चलते है परंतु जो पक्के फौलाद का है वह लपकता भी नही और मुड्ता भी नही है और बैठता भी नही परंतु उसमे से एकाध बार कुछ भाग टूटकर पड्ता है । वह मिट्टी मे मिल जाता है उस

टूटकर मिट्टी में मिले भाग पर कभी भी ताव नही पड्ता है ।।३०९।।

इसो अंग अेक संभावो जाण ।। भजो निज ब्रम्ह मिलो सत्त खाण ।।३१०।।

तो उस तरहका पक्का फौलादीके जैसा,एक स्वभाव धारण करो(पक्के रहो)। उस निज ब्रम्हका भजन करके,अपने निजखाणमे न मिलकर,सतखाणमे मिल जाओ ।(अपनी खाण यानी जिस खाणमेसे धातु आयी,वह अपनी निजखाण। और सतखाण यानी यह सारी पृथ्वी,की जिस पृथ्वी पर सभी धातुओंकी खाण है। ऐसी यह धातु सतखाणमे यानी पृथ्वीमे घिस-घिसकर मिल गया। उस पृथ्वीमे मिली धातु के उपर,पुन: पुन: मार नही पड्ता। परंतु जो अपनी खाणमें(धातुकी खाणमे)मिला तो वह धातु पुन: पुन: खाणमे से निकाला जाता है। और पुन: उसके उपर ताव व मार पड्ने लगता है परंतु धातु का भाग(अंश)सतखाण याने पृथ्वीमे मिली हुयी धातुके उपर फिरसे ताव व मार नही पड्ती है । इसी तरहसे ब्रम्हमे से आए हुए जीव,पुन:ब्रम्हमे जाकर मिल गए तो भी जैसे खाणमे मिली हुयी धातु पुन: खाणमेसे निकलने पर उसके उपर ताव व मार पड्ती है इसीतरहसे पुन: ब्रम्ह मे से आने पर उसके उपर संचित कर्मोका ताव व मार पड्ने लगती है । इसीलिए ब्रम्हमे न मिलकर,ब्रम्हका उल्लघंन करके ब्रम्ह के उस पार जानेका विचार करो । जैसे खाणके शिवाय पृथ्वीमें धातु मिल जाती है वैसे) ।।३१०।।

युँहि सब बणायो घाट ।। मिले सब रेत परोटे जाट ।।३११।।

ऐसे ही सभी घाट बनाये। वे घाट मिट्टी में मिल जाने पर जैसे किसान खेती की गुडाई आदि कार्य,फावडा,कुदाल,हंसुआ,आदि अवजारो से करता है तो वे खेती के औजार घिस-घिसकर जमीन में मिल जाते है। जो भाग जमीन में मिल गया उसके उपर पुन: ताव और मार नही पड्ती है ।।३११।।

नहिं सो चूप सरावे आण ।। घसे घस सेग मिले धर जाण ।।३१२।।

फिर उसमे कोई भी चूक भी नही रहती है और उसकी आकर सराहना भी(शोभा)भी नही करता है । घिस-घिसकर सब(लोहा)जब जमीन मे मिल जायेगा ।।३१२।।

जाहाँ सुं होय मिल्यो तां मांय ।। अबे घण घावन लागे आय ।।३१३।।

जहाँ से उत्पन्न हुये वैसेही उसमे जाकर मिलो । अब उसके उपर घन का घाव आकर नही लगेगा ।(कारण की आकार मिटकर धातु जमीन मे मिल गयी । उसके उपर घन का घाव नही लग सकता है ।।३१३।।

संडसी घण अेर नर आग ।। हमे बस नाथ मिले धुर जाग ।।३१४।।

अब वह धातु सांड्सी,ऐरण,घन,और आग इनके वश मे नही रही,क्योंकि वह धातु अपनी खाण की भी खाण पृथ्वी में जाकर मिल गयी । धातु खाण में जाकर मिली होती तो दुबारा आ जाती थी,परंतु धातू पहले की जगह यानी जिस जगह से(पृथ्वीसे)खाण निकली उस पृथ्वी मे ही जाकर मिल गयी ।।३१४।।

सबे गहे राछ अनेक संभाय ।। अबे बस नहिं मिल्या धर माय ।।३१५।।

अब सभी अवजारो से वह जमीन मे मिली हुई धातु पकडी नही जाती है । जो धातु जमीन मे मिल गई वह अब किसी के भी वश मे नही रह गई ।।३१५।।

तहाँ लग होयर जोखंड लार ।। जहाँ लग घाट दिरावे मार ।।३१६।।

जमीन मे मिलते-मिलते यदी उसका थोडासा टुकडा भी रह गया तो भी उसके उपर फिर से जबतक घाट है तबतक मार पडेगा ही पडेगा ।(बहुत सा भाग जमीन मे मिल गया और बाद में थोडासा भी भाग यदी रह गया तो भी उसके उपर जबतक घाट है तबतक उसके उपर मार पडेगा ही ।)।।३१६।।

मिटावे सेंग धऱ्यो आकार ।। तबे घण घावण लागे हे मार ।।३१७।।

जो आकार धारण किये हो वो सब आकार मिट जाने पर घन का घाव और मार नही लगेगी । ।।३१७।।

इसी बिध आप बिचारो आय ।। मिले ज्युँ धात मिलो तुम जाय ।।३१८।।

इसी तरह से आप भी मन मे विचार करो । जैसे धातु जमीन मे मिट्टी में मिल जाती है । वैसे ही आप भी जाकर मिल जाओ । मतलब तुम्हारा जीवपना मिटा दो । यह जीवपना सतस्वरुप वैराग्य विज्ञान प्रगट होनेपे मिट जाता है ।।३१८।।

छुडावो दाग अजल ओलाद ।। मिटावो सेंग किया सुख स्वाद ।।३१९।।

तु तुम्हारे दाग याने कर्म छोड दो । अजल(पुत्र,नाती,पनती)औलाद जो तुमने सुख और स्वाद किये वो सब मिटा दो ।।३१९।।

रहे सो लार तिका बिध कोय ।। ताहाँ लग पार न पूंचे सोय ।।३२०।।

यह विधी ही है कि,जबतक धातु का कोई भाग पिछे रहता है तबतक उस भागपे मार बैठता है ऐसे ही जीव के कर्म बाकी रहते है तबतक जीवपर यमकी मार पडती ही है । ।।३२०।।

भुगतो सेंग किया सो आय ।। अबे सो गल मे बंधोस जाय ।।३२१।।

इसलिये जो-जो आकर कर्म किये वे सभी किये गये कर्म भोगो । जो-जो कर्म अब किये वे सभी गले मे बांधे गये वे भी भोग लो ।।३२१।।

मिले सो सेंग सुखो दुख आय ।। तजो सब सुभ असुभ उपाय ।।३२२।।

जैसे-जैसे कर्म किये वे सभी वैसे-वैसे सुख और दु:ख आकर मिलते है । अब तुम तीन लोक चौदह भवन के सभी शुभ व अशुभ सभी उपाय छोड दो ।।३२२।।

मिलो घर आद अनादु जाय ।। तबे तुं ब्रम्ह न दूजो कवाय ।।३२३।।

अब तुम आदी घर(पारब्रम्ह)इससे भी परे आदी घर सतस्वरुप जाकर मिलो तब तुम ब्रम्ह ही हो दुसरे कोई नही ।।३२३।।

कहुँ सत्त बात सुणाऊं तोय ।। मिलो घर आद सबे कल खोय ।।३२४।।

मै सच्ची बात तुम्हे सुना रहा हूँ। सभी कल छोड्कर आदी घर जाकर मिल जावो।।३२४।।

तुमे हम ब्रम्ह बिस्वा बीस ।। चलो घर आद कहावो ईस ।।३२५।।

तुम और हम बीस-बीसव ब्रम्ह है तो अब अपने आदीघर चलो फिर हम भी अपने को ईश्वर कहलायेंगे । जैसे माया में ब्रम्हा,विष्णू,महेश ईश्वर कहलाते वैसे हम भी सतस्वरुप में ईश्वर कहलायेंगे ।।३२५।।

सिष वायक दोहा ।।

हम तुम से अेसी कहुँ ।। सुणो हेत चित लाय ।।
काहाँ घर आद अनाद हे ।। सो घर कोण कहाय ।।३२६।।

।। शिष्यउवाच ।।

।। दोहा ।।

शिष्य बोला कि मै तुमसे ऐसा कहता हूँ उसे तुम प्रिती व चित्त लगाकर सुनो । वह आदि घर कौनसा है?और अनादी घर कौनसा है? ऐसे आदि अनादी घर कौनसे कहते हो ये बतावो ? ।।३२६।।

कहाँ सुं चल मै आवियो ।। कह सुणावो मोय ।।
मै जाणुं इण बाहरी ।। अवर न जगा होय ।।३२७।।

मै यहाँ संसार में कहाँ से चलकर आया हूँ वह मुझे कहकर सुनावो?मै जानता हूँ कि इसके अलावा दुसरी कोई भी जगह नही है ।।३२७।।

वाहि सो मै रम रहयो ।। ओ घर आदर अंत ।।
मै नहिं जाणु ओर कूं ।। काहाँ बिराजे संत ।।३२८।।

वही से मै आकर संसारमें खेल रहा हूँ । वही घर आदि और अंत है । दुसरा कोई घर मै नही जानता हूँ । ये सभी संत कहाँ जाकर विराजमान होते है यह मुझे कुछ भी मालूम नही है ।।३२८।।

सिध साधक मूनि जना ।। सुर नर देव कहाय ।।
सो सब धर पर रम रया ।। सत लोक कुण जाय ।।३२९।।

सिध्द साधक,मुनी और जन याने संत,सुर याने देव,नर याने मनुष्य,देव याने ब्रम्हा,विष्णू, महादेव ये सब कहलाते है । वे सब इस जमीन पर ही खेल रहे है । वे सब तो जमीन पर ही है । फिर उस सत्तलोक में कौन जाता है ? ।।३२९।।

सत्त लोक जहाँ कुण बसे ।। काहाँ कहो उण जाग ।।
को बाणी क्या रंग हे ।। को बेली क्या राग ।।३३०।।

और तुम सत्त लोक कहते हो तो उस सत्त लोक मे कौन निवास करता होगा?और उस सतलोक में क्या है?वह बतावो और वहाँ का रंग क्या है?वहाँ बेला यानें समय कौनसी है और प्रिती किससे है ? ।।३३०।।

कोवो धाम बिचार के ।। बरणो बिध बमेक ।।

सत्त लोक क्या सुख हे ।। मिल क्या जाणे पेख ।।३३१।।

वह धाम बिचार करके बतावो?उस धाम की विधी और विवेक वर्णन करके बतावो? उस सतलोक मे क्या सुख है?और वह धाम मिलने पर देखकर क्या जाना जाता है?।।३३१।।

मिले किसी बिध जाय के ।। सो सब कहो उपाय ।।
तीन लोक तासुं परे ।। ताहाँ किसी बिध जाय ।।३३२।।

और वहाँ किस विधी से जाकर मिला जाता है? वहाँ जाकर मिलने के सभी उपाय मुझे बतावो? यह सत्तधाम तीनो लोकोसे परे है तो वहाँ किसी विधी से जाया जाता है ?।।३३२।।

सुरग मध पाताळ ले ।। तीनु धाम कहाय ।।
ताहाँ आगे को बात सुण ।। मिल कर कहे न आय ।।३३३।।

स्वर्गलोक,मृत्युलोक और पाताल लोक ये ऐसे तीन लोक कहलाते है । इनसे आगे की बात सुनकर वह धाम मिल जानेपर वहाँ से कोई आकर कहता नही है ।।३३३।।

तीन धाम बिसराम हे ।। ते जाणे सब कोय ।।
के बिरिया उत जाय बो ।। बोहो बिरिया तत्त होय ।।३३४।।

ये तीन धाम जीवोको विश्राम करनेके है याने रहनेके है । इन तीनो लोकोको सभी ही जानते है । कितना समय वहाँ जानेमें लगेगा और किस समय तत(ब्रम्ह)याने मायारहीत होगा?।३३४।।

जाणे कदे न देखिया ।। काना सुण्या न भेव ।।
कहे संत चोथा देस में ।। हम हिं मिले केसा देव ।।३३५।।

।। गुरू उवाच ।। छन्द मोती दान ।।

मैने जाना नही और आँखों से कभी देखा नही और कानो से उसका भेद कभी सुना नही। चौथे देश संत कहते है वह देश हमे कैसे मिलेगा? ।।३३५।।

गुरू वायक ।। छंद ।। मोती दान ।।

रटो राम नाम तुमि ब्रम्ह होई ।। बिना तुम देव नहिं देख्यो कोई ।।३३६।।

गुरु महाराज बोले राम नामकी रटन करो जिससे तुम ही ब्रम्ह हो जावोगे । तुम्हारे अलावा दुसरा देव है ही नही ।।३३६।।

जाहाँ सत्त लोक तमे ताहाँ पूर ।। नहि रंग रूप अरूप हजूर ।।३३७।।

जहाँ सतलोक है,वहाँ तुमही भरपूर हो । वहाँ माया का कोई रंग,रुप नही है । वह अरुपी होते हुए,हुजूर हो ।।३३७।।

इयाँ खिण खेव नाँहि सतदेव ।। अभे अंग दोय तिहुँ लोक होय ।।३३८।।

यहाँ जगतके सभी नर–नारीसे लेकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव देवता तक नाश होनेवाले देव है । यहाँपे कोई भी सतदेव नही है । ब्रम्ह और माया ऐसे दो अंग तीनो लोको में होते है ।।३३८।।

बिना सत ग्यान पड्यो भ्रम बीच ।। माहो मांय दुखी माया अंग कीच ।।३३९।।

सभी जीव सतज्ञान के बिना भ्रम में पड गये । सभी आप-आपमें दु:खी होते है । मायारुपी गारा मतलब किचड सभी के अंगो में लगा हुवा है ।।३३९।।

जाहाँ सत्त लोक मिटो अंग सार ।। आपो आप ब्रम्ह रहो निरधार ।।३४०।।

जहाँ सतलोक है वहाँ जाकर सब स्वभाव मिटा डलो । वहाँ खुद ही ब्रम्ह होकर निर्धार याने आधार के बिना रहो ।।३४०।

नहिं सुख चेन न को दुख दाई ।। तुमि ब्रम्ह आप बिना कुल माई ।।३४१।।

वहाँ माया के कोई सुख चैन नही है । और वहाँ काल के दु:ख दाई याने दु:ख देनेवाले भी कोई नही है । वहाँ तुम ही स्वंय कुल के बिना व माँ-बाप के बिना ब्रम्ह हो ।।३४१।।

जाहाँ सत धाम न माले हे कोय ।। सदा थिर थंभ अभंग स होय ।।३४२।।

जहाँ सतधाम है वहाँ पांच विषयो के भोग भी कोई नही है । वह सतलोक सदा स्थिर स्तंभ याने हमेशा रहनेवाला,अभंग याने भंग नही होनेवाला ऐसा है ।।३४२।।

अपार अग्याद अजीत अनाथ ।। ताहाँ सत्त लोक ना कोई मान न साथ ।३४३।

वह सतलोक अपार याने जिसका पार नही,अगाध,अजीत याने किसीसे भी जीता नही जा सकता,अनाथ ऐसा है। वहाँ किसका साथ भी नही है और कोई मान भी नही है ।।३४३।।

अलाय अलोप अतूट असाल ।। जाहाँ ब्रम्ह धाम नहिं मंझ पाल ।।३४४।।

वह अलाय,अलोप,अटूट,असाल है । जहाँ ब्रम्ह धाम है वहाँ जानेमे बीच मे कोई अटकाव नही है ।।३४४।।

हुवा न मुवा न किया न कोय ।। इसा अदभुत लखाया मोय ।।३४५।।

वहाँ कोई उत्पन्न हुवा भी नही और मरा भी नही और किसी ने किसी को घडाया भी नही ऐसा अद्भुत मेरे समझ मे आया ।।३४५।।

अमोल अलेख अचाय न चाय ।। बण्या बिध मोख बिराजे हे राय ।।३४६।।

वहाँ हर जीव अमोल है,अलेख है । माया की चाहना न रखनेवाला है । ऐसा हंसो के लिये वह मोक्षपद बना है । वहाँ विराजनेवाले सभी राजा है ।।३४६।।

अरेह अराह अरोसन रीस ।। नहि कोई रिझ न को वेखीस ।।३४७।।

अरेह(राहत नही),अराह(रास्ता नही),अरीस और रीस भी नही । कोई किसी पर खुश हुवा भी नही और कोई किसी के उपर खिझता भी नही है ।।३४७।।

अथाह अचुक न बार न पार ।। बिना थंभ धाम बण्या निरधार ।।३४८।।

अथाह याने थाह नही,अचूक याने बिनचूक है उसका वार-पार भी नही है । उसे खंभा भी नही लगाया है । वह बिना खंभे का निराधार बना हुवा धाम है ।।३४८।।

जाहाँ सुख चेन अचेन न कोय ।। न को त्रण जो बन बुढा न होय ।।३४९।।

वहाँ यहाँ के समान कोई सुख-चैन भी नही है । और यहाँ के समान काल के दु:ख भी

नही है । और यहाँ के देह के समान कोई तरुण भी नही,जवान भी नही और कोई बूढा भी नही होता है ।।३४९।।

अखिह अचाल अलोप अलंग ।। जाहाँ सत्त लोक नहिं लिंग भग ।।३५०।।

वह अखीह याने न फूटा हुवा,अचाल याने न चलनेवाला,अलोप याने गुप्त न होनेवाला,अलंग याने जिसे कोई लांघ नही सकता ऐसा सतलोक है । वहाँ लिंग भी नही है और भग भी नही है ।।३५०।।

बिना जळ देव दयाल दिखाय ।। रमे सब जीव माया मंझ माय ।।३५१।।

वहाँ जल के बिना और देव के बिना वह दयाल दिखाई देता है । यहाँ सभी जीव माया में रमते रहते है वैसे वहाँ यहाँ के समान माया ही नही है इसकारण कोई माया मे रमता ही नही ।।३५१।।

न जाणुं हुँ राम तुमारा पार ।। काहाँ ऊं देस नहि नर नार ।।३५२।।

रामजी,आप अपार हो । आपका पार मुझे नही समझ मे आता है । वह देश कौनसा है कि जहाँ स्त्री भी नही और पुरुष भी नही है ।(जहाँ लिंग भी नही और भग भी नही है ।)।।३५२।।

जमी पे रहाय अधार न बिन ।। कहाँ सत्त लोक कहो सब धिन ।।३५३।।

जमीन के बिना,आधार के बिना जिसे सभी धन्य कहते है वह सतलोक कहाँ है ?।।३५३।।

गिर मेर पहाड़ बड़ा भुज काहाँ ।। ताहाँ सत्त लोक कहे हेक नाहा ।।३५४।।

यहाँ पे गिरी याने बडा पहाड,मेर पर्वत भुज( )कहलाते वे पर्वत पहाड उस सतलोक मे ये है या नही ।।३५४।।

अभे आ कास ताहाँ का होय ।। कहो मद बिच बतावो मोय ।।३५५।।

अब आकाश वहाँ कहाँ होता है बतावो?वह सतलोक किस के बीच मे है वो मुझे बतावो? ।।३५५।।

कहुँ बिध ठोड़ केतियक तोय ।। बूंजुसत्त लोक बतावो मोय ।।३५६।।

सतलोक की विधी और जगह मुझे बतावो ? ।।३५६।।

दोहा ।।

जन सुखदेव निज मन कहे ।। सुण अप मन सत्त बात ।।
सत्त लोक सब मांय हे ।। सोझो देह पिंड गात ।।३५७।।

।। दोहा ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की निजमन को याने जिवोको कहते है की मेरी बात सुनो। सतलोक सभी में है। यदी सतलोक देखना होगा तो अपना शरीर और शरीर के सभी अवयव खोजो ।।३५७।।

तीन लोक चवदा भवन ।। ऊँच नीच सब लार ।।

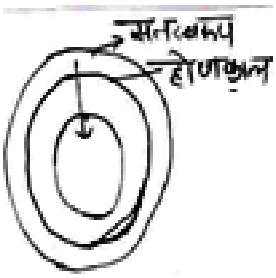

सत्त लोक मे रम रहया ।। जाणे नहिं बिचार ।।३५८।।

उंच हो या निच हो तीन लोक चौदह के सभी जीव के साथ ये सतलोक है ये सभी जीव सतलोकमे रमन कर रहे है परंतु इसका ज्ञान न होनेके कारण सतलोक मे रमन कर रहे है यह समजते नही । ।।३५८।।

सब माहि सत्त लोक हे ।। बैठा सब उन मांय ।।
माया मोह सुं लपटिया ।। तां ते दरसत नाय ।।३५९।।

यह सतलोक सभी मे है और सभी उस सतलोक मे बैठे हुये है परंतु माया और मोह मे जीव के लिपटे होने के कारण वह सतलोक दिखाई नही देता है । (जैसे मुँख पर ओढना लिये हुये मनुष्य को एकदम नजदीक की वस्तू नही दिखाई देती है वैसे ही माया मोह का परदा होने के कारण वह सतलोक दिखाई नही पड्ता है ।)।।३५९।।

जन सुखदेव तो सुं कहे ।। निज मन कूं समझाय ।।
सत्त शब्द सत्त लोक मे ।। उतपत प्रळो नाय ।।३६०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जीवोके निजमनको समझाकर कहते है कि सत्तलोक याने सत्तशब्द में उत्पत्ती और प्रलय नही है ।।३६०।।

बाहिर को सत्त लोक कूं ।। सुणज्यो सब नर आय ।।
पोल मुष्ट में ना बंधे ।। ओहि लोक कहाय ।।३६१।।

बाहरका याने तीन लोक चवदा भवनके परेका सतलोक मै तुम्हें बताता हूँ। उसे सभी मनुष्यों आकर सुनो। जो पोल(आकाश)में या मुष्ठी मे बाँधे नही जाता है वही सतलोक है ।।३६१।।

सुण साहेब युँ रम रया ।। घृत दूध रस माय ।।
महा सुन पर सुन हे ।। सो सत्त धाम कहाय ।।३६२।।

सतस्वरुप शुन्य साहेब सभी मे ऐसे रमन कर रहा है जैसे घी दूधमे रमन कर रहा है । यह सतस्वरुप शुन्य साहेब जिसे सतधाम कहते है वह होनकाल समान बडे सुन्य के परे है ।३६२।

सिख वायक ।।

ओ सत लोक सरूप हे ।। तो मुझ सोच न कोय ।।
हालुं डोलुं फिर घीरूं ।। रहुँ इसी मे सोय ।।३६३।।

।। शिष्यउवाच ।।

यह सतलोक का स्वरुप है तो फिर मुझे कोई भी फिकर नही है । इसमे ही मै चलता,हिलता और फिरता हूँ और इसीमे ही सोया रहता हूँ ।।३६३।।

यां मे बौ बाता कहुँ ।। यांहि लील बिलास ।।
तो मो कूं क्या सोच हे ।। मो सत सांई पास ।।३६४।।

और इसीमे ही मै बहुत सी बाते कहता हूँ और इसमे ही लीला व विलास करता हूँ । यदी सत साँइ मेरे पास मे है तो फिर मुझे फिकर किसकी है ।।३६४।।

सो सत्त शब्द सरूप हे ।। सत्त धाम कहुँ लाय ।।
तुम़ को तिण बिध रीत सूं ।। हम बेठा उस माय ।।३६५।।

जो सतशब्द सतस्वरुप है उसका सतधाम लाकर कहता हूँ । तुम बताते हो उस रीती से और तुम कहते हो उस विधी से तो मै उस सतधाम मे जाकर बैठा हूँ ।।३६५।।

आठ पोहोर चोसट घडी ।। रहुँ सत्त सुंन मांय ।।
तम साहिब सत्त अेक हे ।। भजुं कोण पे जाय ।।३६६।।

मै आठोप्रहर,रात-दिन सत शुन्य में रहता हूँ । आप कहते हो सतसाहेब सब जगह एक ही है तो अब किसका भजन करुँ? किसके पास में जाऊँ ? ।।३६६।।

गुरू वायक ।। छंद ।।

सुणो मन देवा ।। कहुँ सुन भेवा ।।
माया सुन क्वाई ।। बसे जुग माई ।।३६७।।

।। गुरूउवाच ।। द्वन्द ।।

मन देव सुनो,मै तुम्हे शुन्य का भेद बताता हूँ । माया का शुन्य कहलाता है,उसमे सारा जगत बसता है । ।।३६७।।

दोहा ।।

तीसुं सुन फिर दोय हे ।। छोटी बीच अनेक ।।
तांहा लग आतम राम हे ।। माया हिल मिल पेक ।।३६८।।

।। दोहा ।।

तीस शुन्य और भी दो है और छोटे शुन्य उसके बीच मे अनेक है । जब तक माया से हिल-मिलकर दिखाई देता है तबतक आत्माराम याने ५ आत्मा के साथ का ब्रम्ह है ।।३६८।।

माया सुन अेती कही ।। ताहाँ लग सुर नर होय ।।
सातां मध सब देवतां ।। इक बीस मध सब लोय ।।३६९।।

जहाँ तक सुर(देव),नर(मनुष्य)है,वहाँ तक मायाके शुन्य बताये है । और सात(भुर,भुवर, स्वर,महर,जन,तप,सत)शुन्यो मे सभी देव है और मेरुदंड की इक्कीस मणियों के शुन्यों मे,अलग-अलग देव लोक है ।।३६९।।

ता मे फेर भिन केहत हे ।। तीन सुन अधिकार ।।
तिण मे मोटा देवतां ।। सो सब हे उण लार ।।३७०।।

उसमे और भी तीन शुन्य अलग है । उनका अधिकार अधिक है । उन बडे तीन शुन्यों मे बडे तीन देवता याने ब्रम्हा,विष्णू,महादेव रहते है और उनके साथ उनके समान स्थिती प्राप्त किये हुये अनेक देवता है-जैसे-ब्रम्हा के लोक के ब्रम्हा के समान देवता,विष्णू के

लोक के विष्णू के समान देवता,शंकर के लोक के शंकर के समान देवता ।।३७०।।

आगे सुन अपार हे ।। नव सुन मोटी जोय ।।
महा सुंन पर सुंन सूं ।। आगे साहिब होय ।।३७१।।

उससे आगे अपार शुन्य है । उससे आगे महामाया, प्रकृती, ज्योती ,अजर, आनंद, वज्र,इखर सतलोक,जींग ऐसे बहुत बडे नऊ शुन्य है । बडे शुन्यके उपरके शुन्यके उस पार साहेब है । ।।३७१।।

माया सुंन सब सोझ के ।। मिलो परम सुन जाय ।।
तब तुम साहेब अेकवो ।। सत्त लोक के मांय ।।३७२।।

माया के सभी शुन्य शोधकर,परम शुन्य मे जाकर मिलो । तब तुम सतलोक मे जाकर तुम व सत साहेब एक हो जाओगे ।।३७२।।

सिष वायक ।।

ओ तुम भेव बतावियो ।। परम सुन को आय ।।
बिन पर पाखाँ बाहिरो ।। क्युँ कर उड वाहाँ जाय ।।३७३।।

।। शिष्य उवाच ।।

यह परम शुन्य का भेद,आपने मुझे बताया । तो पर पंखो के बिना,उड्कर वहाँ किस तरह से जायेगा ।।३७३।।

पर पाखाँ मेरे नहीं ।। पावाँ चल्यो न जाय ।।
बिचे तुम बोहो सुंन कही ।। क्युँ कर मिलिये आय ।।३७४।।

मुझे पर नही और पंख भी नही और पैरो से चलकर जाया जाता नही और बीच मे आपने बहुत से शुन्य बताया,तो फिर किस तरह से,जाकर मिलना होगा ।।३७४।।

सुनं सुन के बीच में ।। पडदा घाट करूर ।।
बिन आवध सस्त्र बिना ।। कोहो किम करिये दूर ।।३७५।।

शुन्यों–शुन्यों के बीच मे,बहुत से परदे और बहुत कठिन घाट है,तो हथियार के बिना और शस्त्र के बिना,ये परदे और घाट किनारे,कैसे किए जायेंगे । यह मुझे बताओ ? ।।३७५।।

प्रथम तो सब भूलग्या ।। नवदा बेद बिचार ।।
कित्त सायब सत्त लोक हे ।। कोहो कुण जाण न हार ।।३७६।।

प्रथम तो नवद्या भक्तीमें और वेदो का बिचार करनेमे,सभी लोग भूल गये । कहाँ साहेब है व कहाँ सतलोक है?तो इनको(सतलोक व साहेबको)जाननेवाला कौन है,वो बताओ? ।।३७६।।

गुरू वायक छंद ।। अर्ध भुजंगी ।।

कहुँ सत्त भेवा ।। सुणो सब देवा ।। गहो ग्यान भारी ।। लगे मंझ तारी ।।३७७।।

।। गुरू उवाच ।। छन्द अरध भुजंगी ।।

मैं सत भेद कहता हूँ,सभी नरनारी देवा सुनो । यह भारी ज्ञान धारण करो । उससे ताली

लगावो ।।३७७।।

हरदे मुख हेला ।। करे केण पेला ।। धरो ध्यान सोई ।। भजो नित्त मोई ।३७८।

सर्व प्रथम हृदय व मुंख से पुकार करो और उसका ध्यान करो । इसप्रकार नित्य भजो । ।।३७८।।

नाभी धाम लारा ।। पिया पेम प्यारा ।। उभे अंक दोई ।। गहो मुख सोई ।३७९।

आगे नाभी धाम मे पीछे,प्रेम का प्याला पीवो । दो अंक रा व म यह मुँखमे धारण करो ।३७९।

दिवस रात सारी ।। लवे जीभ प्यारी ।। तबे गेल सूझे ।। बड़ा संग बूझे ।।३८०।।

मुखमे रात-दिन जीभ चलती,वह बडी प्यारी लगती है । बडे सतपुरुषोका संग करके,उनसे पूछोगे,तब रास्ता सूझेगा ।।३८०।।

रटे नाँव सोई ।। ब्रेह बिध होई ।। छाडे मान माया ।। कसे काम काया ।।३८१।।

नाम रटन करता है,तब यह विधी होती है,कि विरह आता है। आँसू आते है। फिर निजमन माया भी छोड देता और मान तो बिल्कुल ही नही चाहता है और काम को कसकर,काया को भी कसने लगता है मतलब इन्द्रीयोके भोगमे जाने नही देता है ।।।३८१।।

हरे हेत सारा ।। लगे नाँव प्यारा ।। हिरदा नाभ अेकी ।। माया सुन पेखी ।३८२।

और सभी की प्रिती छोड देता है और सिर्फ नाम प्यारा लगता है । हृदय और नाभी इन दो जगहों पर एक सरीखी माया के शुन्य है वे देखे । ।।३८२।।

पड़यो ताव सोई ।। रोवे सब लोई ।। काहा खेल क्राणो ।।पाँच धर जाणो ।३८३।

वहाँ सभी शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध इन पांचो घर के पांचो लोगो पर तकलीफ पडने लगी इसकारण सभी शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध ये पांचो लोग रोने लगे । इन पांचो लोगोका रोना देखकर यह जीव यह क्या खेल है ऐसा सोचता ।।३८३।।

नाभी नास धारा ।। अेको सूत सारा ।। धिनो राम राई ।। दियो भेव आई ।३८४।

नाभी व नासीका मे एक धारा लग गई । उसके सब एक सूत बंध गये,आप रामजी धन्य हो, कि मुझे आकर ऐसा भेद दिए ।।३८४।।

गरजी गेण सारी ।। पियो पेम भारी ।। सुणो संत सोई ।। अबे पंख होई ।३८५।

सारा गगन गरजने लगा,उसका बडा भारी प्रेम पीने मे आया । सब संतो सुनो । तब उडने के लिये पंख बनते है ।।३८५।।

मुखाँ बिच झूल्या । कंठ कंवळ फूल्या । धुजे रूम सारा । नखो चख प्यारा ।३८६।

पहले मुँखमे झोके लेने लगा। फिर कंठका कमल फूला(खिला),फिर सारे शरीरके रोम धूजने लगे।(कांपने लगे)और नाखुनोंमें और आँखोमे सभी जगह(शब्द)प्यारा(प्रिय)लगने लगा । ।।३८६।।

छंद मोतीदान ।।

पिया रस पेम चडी मतवाल ।। हिरदे बिच अेक रमे सत्त बाल ।।३८७।।

।। द्वन्द मोती दान ।।

जब प्रेम रस पिया,तब उसका नशा होकर,मतवाला हो गया । हृदय मे एक सत बालक याने सतशब्द खेलने लगा ।।३८७।।

करे किळ कोल हसे मुरझाय ।। निसो दिन बाल रमे उर मांय ।।३८८।।

वह बालक किलकोल(ध्वनी)(किलकारी)करता है,कभी हँसता है और कभी मुरझा जाता है । वह बालक रात-दिन हृदय मे खेलने लगा ।।३८८।।

उछाला खाय हिरदा उर मांय ।। सबे जुग ख्याल सुवावे नाय ।।३८९।।

हृदय मे उछाल खाता है,अब संसार के सभी खेल,अच्छे नही लगते है ।।३८९।।

रमे इण रीत निसो दिन स्याम ।। पडे जळ बाय हिरदे उर धाम ।।३९०।।

इस तरहसे रात-दिन खेलने लगा,हसी तरहसे पानी और हवा हृदयके धाममें(स्थान में)पडने लगा ।।३९०।।

चमके जोर अपणा आप ।। धुजे सब रोम कांपे सब पाप ।।३९१।।

और अपने आप के ही जोर से चमकने लगा । और शरीर के सारे केश धूजने लगे(कांपने लगे)और अंदर के सब पाप कांपने लगे ।।३९१।।

उठे मंझ लेहर समदा छोल ।। पड़े घर गाँव अचूकी रोल ।।३९२।।

और हृदय मे लहरे,समुद्र की लहरों के जैसी उठने लगी,वो जैसी घर व गाव मे अचूक धूम होने लगी ।।३९२।।

उबके आय कुवे जळ नीर ।। झरे नित नेण लग्या अंग तीर ।।३९३।।

जैसे कुएँसे पानी उबकने लगता है।(उफान लेने लगता है,कुएँके उपर से पानी उफान लेने लगता है)इसी तरहसे आँखो से हमेशा पानी बहता है। कारण की हृदयमे ज्ञान का तीर लगा।(इसी तरह से विरह आकर आँखो से उफान लिए हुए की तरह,पानी बहता है।३९३।

काँपे कर पेल घिरे सब नाड ।। बले नख टूट चले बोहो जाड़ ।। ३९४ ।।

पहले से ही हाथ कांपने लगता है । और गर्दन की नाड,टेढी होकर मुडने लगती है और नख टूट(पूर्ण भरा हुआ)चलने लगता है ।।३९४।।

चखे बोहो साव अमीरस मांय ।। खटो रस सांव निसोदिन खाय ।।३९५।।

और अंदर बहुतसे स्वाद चखने लगता है । और षट रस(छःतरहके रसोका स्वाद)रात-दिन आतें रहता है ।।३९५।।

बंधे मन धीर उमंगे बेराग ।। घड़ी येक धीर तजुं पल जाग ।।३९६।।

और मन मे धीर बंध जाता है । और वैराग्य उठता है,घडी भर धीर जागृत होने का,पल में छोड देता है ।।३९६।।

उठे मल जोर हिरदे अस्थान ।। चले द्रिग नीर नेणा मध जान ।।३९७।।

वहाँ हृदय स्थान मे जोर से उठता है। और आँखो के रास्ते पानी चलने लगता है।।३९७।।

हीलोला खाय हँसे कब रोय ।। इसा बोहो चाव हिरदे हर होय ।।३९८।।

कभी हिलोला खाता है और कभी हंसता है ओर कभी रोता है । इस तरहसे हृदय में बहुत तरह के चरीत्र होते है ।।३९८।।

गहे सो मून कबु बक वाद ।। करे बोहो रंग तजे सो स्वाद ।।३९९।।

कभी मौन धारण करता है और कभी बक बाद करता है और बहुत तरह का रंग करता है। और सब स्वाद छोड देता है ।।३९९।।

उमग्यो इन्द्र हिरदे उर माय ।। लागो झड़ आव उघाडे नाय ।।४००।।

हृदय मे इन्द्र(मन)उमंग कर जोर से आया । आकर झडी(भजन की झडी)खुलती नही है । ।४००।

बरसे कण बूंद ररो मंमंकार ।। धिनो सत्त स्याम उपावण हार ।।४०१।।

और कण के छिंटे पडने लगे यानी राम नाम की,झडी लग गयी । सतस्वामी,आपने यह रामनामकी झडी उत्पन्न की इसलिये आप धन्य हो । ।।४०१।।

कियो भव भेव किमे करतार ।। रटे मुख नाँव चले उरधार ।।४०२।।

इस भवसागर मे यह सतलोक जानेका भेद कर्तार आपने कैसा बनाया? मुँख से रामनाम का रटन करके जीव सतलोक मे जा रहे है । ।।४०२।।

बंधी लिव डोर इसी उर माय ।। अरट गल माल धोरि जल जाय ।।४०३।।

और हृदयमें धार बंध गयी। (रामनामका रटन मुँखसे किये ऐसा भारी भेद आपने जीवोके लिये बनाया इसलिये आप धन्य है और हृदयमें शब्द कैसे आया?) ।।४०३।।

।। अथ बेली ग्रंथ अपूर्ण ।।